कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही होऊंगी	हम रही होवेंगी
तू रही होवेगी	तुम रही होवोगी वा होगी
वह रही होवेगी	वे रही होवेंगी

२४३ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्त्ता—पुंलिङ्ग

मैं रहता	हम रहते
तू रहता	तुम रहते
वह रहता	वे रहते

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती	हम रहतीं
तू रहती	तुम रहतीं
वह रहती	वे रहतीं

२ सामान्यवर्त्तमान काल ।

कर्त्ता—पुंलिङ्ग

मैं रहता हूं	हम रहते हैं
तू रहता है	तुम रहते हो
वह रहता है	वे रहते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती हूं	हम रहती हैं
तू रहती है	तुम रहती हो
वह रहती है	वे रहती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुंलिङ्ग

मैं रहता था	हम रहते थे
तू रहता था	तुम रहते थे
वह रहता था	वे रहते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती थी	हम रहती थीं
तू रहती थी	तुम रहती थीं
वह रहती थी	वे रहती थीं

संदिग्धवर्त्तमान काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता होऊंगा	हम रहते होवेंगे
तू रहता होगा	तुम रहते होओगे वा होगे
वह रहता होगा	वे रहते होवेंगे वा होंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती होऊंगी	हम रहती होवेंगी
तू रहती होवेगी	तुमरहतीहोओगी वा होगी
वह रहती होवेगी	वे रहती होवेंगी

२२४ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

१ विधि क्रिया।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

म रहूं	हम रहें
तू रह	तुम रहो
वह रहे	वे रहें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
रहिये	रहियो।

२ सम्भाव्यभविष्यत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूं	हम रहें
तू रहे	तुम रहो
वह रहे	वे रहें

३ सामान्यभविष्यत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहूंगा	हम रहेंगे

तू रहेगा	तुम रहोगे
वह रहेगा	वे रहेंगे

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूंगी	हम रहेंगी
तू रहेगी	तुम रहोगी
वह रहेगी	वे रहेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया ।

रहके रहकर वा रहकरके ॥

सकर्मक क्रिया के रूप ॥

२७४ सकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त । अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण पाना क्रिया के सम्पूर्ण रूपों में लिखते हैं जिनका धातु स्वरान्त होता है ॥

पाना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	पा
हेतुहेतुमद्भूत	पाता
सामान्यभूत	पाया

२७६ सामान्यभूत और जिन कालोंकी क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्य भूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया	मैंने वा हमने पाये
तूने „ तुमने पाया	तूने „ तुमने पाये
उसने „ उन्हों ने पाया	उसने „ उन्हों ने पाये
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिंग औरबहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई	मैंने वा हमने पाईं
तूने „ तुमने पाई	तूने „ तुमने पाईं
उसने „ उन्होंने पाई	उसने „ उन्हों ने पाईं

२ आसन्नभूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया है	मैंने वा हमने पाये हैं
तूने „ तुमने पाया है	तूने „ तुमने पाये हैं
उसने „ उन्होंने पाया है	उसने „ उन्हों ने पाये हैं
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई है	मैंने वा हम ने पाई हैं
तूने „ तुमने पाई है	तूने „ तुम ने पाई हैं
उसने „ उन्होंने पाई है	उसने „ उन्हों ने पाई हैं

३ पूर्णभूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया था	मैंने वा हम ने पाये थे
तूने „ तुमने पाया था	तूने „ तुम ने पाये थे
उसने „ उन्हों ने पाया था	उसने „ उन्हों ने पाये थे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई थी	मैंने वा हम ने पाई थीं
तूने „ तुम ने पाई थी	तूने „ तुम ने पाई थीं
उसने „ उन्हों ने पाईथी	उसने „ उन्हों ने पाई थीं

४ सन्दिग्ध भूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया होऊंगा	मैंने वा हम ने पाये होवेंगे
तूने „ तुमने पाया होगा	तूने „ तुम ने पाये होओगे
उसने „ उन्होंने पायाहोगा	उसने उन्हों ने पाये होवेंगे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाईहोऊंगी	मैंने वा हम ने पाई होवेंगी
तूने „ तुमने पाई होगी	तूने „ तुमने पाई होओगी
उसने „ उन्होंने पाई होगी	उसने „ उन्होंने पाई होवेंगी

१२० हेतुहेतुमद्भूत और जिनकालोंकी क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल।

एकवचन।	कर्त्ता—पुल्लिङ्ग	बहुवचन।
मैं पाता		हम पाते
तू पाता		तुम पाते
वह पाता		वे पाते
	कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग	
मैं पाती		हम पातीं
तू पाती		तुम पातीं
वह पाती		वे पातीं

१ सामान्यवर्त्तमान काल।

	कर्त्ता—पुल्लिङ्ग	
मैं पाता हूं		हम पाते हैं
तू पाता है		तुम पाते हो
वह पाता है		वे पाते हैं
	कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग	
मैं पाती हूं		हम पाती हैं
तू पाती है		तुम पाती हो
वह पाती है		वे पाती हैं

३ अपूर्णभूतकाल

	कर्त्ता—पुल्लिङ्ग	
मैं पाता था		हम पाते थे
तू पाता था		तुम पाते थे
वह पाता था		वे पाते थे
	कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग	
मैं पाती थी		हम पाती थीं
तू पाती थी		तुम पाती थीं
वह पाती थी		वे पाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल । कर्त्ता—पुंलिङ्ग

मैं पाता होऊंगा	हम पाते होवैंगे
तू पाता होगा	तुम पाते होओगे वा होगे
वह पाता होगा	वे पाते होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती होऊंगी	हम पाती होवेंगी
तू पाती होवेगी	तुम पाती होओगी
वह पाती होवेगी	वे पाती होवेंगी

२२८ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

विधि क्रिया ।

मैं पाऊं	हम पावें
तू पा	तुम पाओ
वह पावे	वे पावें
आदर पूर्वक विधि	परोक्ष विधि
पाइये	पाइयो

१ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुंलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊं	हम पावें
तू पावे	तुम पाओ,
वह पावे	वे पावें

सामान्यभविष्यत काल

कर्त्ता—पुंलिङ्ग

मैं पाऊंगा	हम पावेंगे
तू पावेगा	तुमपाओगे
वह पावेगा	वे पावेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊंगी	हम पावेंगी
तू पावेगी	तुम पाओगी
वह पावेगी	वे पावेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया

पाके पाकर वा पाकरके ॥

२२६ अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण देखना क्रिया के समस्त रूपों में लिखते हैं जिनका धातु व्यंजनान्त होता है ॥

देखना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	देख
हेतुहेतुमद्भूत	देखता
सामान्यभूत	देखा

२३० सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एक वचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखा	मैंने वा हमने देखे
तूने „ तुमने देखा	तूने „ तुमने देखे
उसने„ उन्हों ने देखा	उसने„ उन्हों ने देखे
कर्म—स्त्रीलिंग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिंग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखी	मैंने वा हमने देखीं
तूने „ तुमने देखी	तूने „ तुमने देखीं
उसने„ उन्होंने देखी	उसने „ उन्होंनेदेखीं

२ आसन्नभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखा है	मैंने वा हमने देखे हैं
तूने „ तुमने देखा है	तूने „ तुमने देखे हैं
उसने „ उन्हों ने देखा है	उसने„ उन्हों ने देखेहैं
कर्म—स्त्रीलिंग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिंग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखी है	मैंने वा हमने देखी हैं
तूने „ तुमने देखी है	तूने „ तुमने देखी हैं
उसने„ उन्होंने देखी है	उसने „ उन्होंने देखी हैं

२ पूर्णभूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखा था	मैंने वा हमने देखेथे
तूने वा तुमने देखा था	तूने वा तुमने देखे थे
उसने वा उन्हों ने देखा था	उसने वा उन्हों ने देखेथे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखी थी	मैंने वा हमने देखी थीं
तूने वा तुमने देखी थी	तूने वा तुमने देखी थीं
उसने वा उन्हों ने देखी थी	उसने वा उन्होंने देखी थीं

२३१ शेष कालों की क्रियाओं के रूप रहना क्रिया के रूपों के अनुसार बनाये जाते हैं ॥

२३२ ऊपर के सब उदाहरण कर्तृवाच्य हैं अब सकर्मक धातुके कर्मवाच्य क्रिया का उदाहरण लिखते हैं । कर्मवाच्य में कर्त्ता प्रकट नहीं रहता परंतु कर्महो कर्त्ता के रूप से आता है उसके बनाने की यह रीति है कि मुख्य धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे जाना इस क्रिया के रूपों को काल पुरुष लिङ्ग और वचन के अनुसार लिखते हैं ॥

देखा—जाना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	देखा जा
हेतुहेतुमद्भूत	देखा जाता
सामान्यभूत	देखा गया

२३३ सामान्य भूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती है उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया	हम देखे गये
तू देखा गया	तुम देखे गये
वह देखा गया	वे देखे गये

मैं देखी गई	हम देखी गईं
तू देखी गई	तुम देखी गईं
वह देखी गई	वे देखी गईं

२ आसन्न भूतकाल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया हूं	हम देखे गये हैं
तू देखा गया है	तुम देखे गये हो
वह देखा गया है	वे देखे गये हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई हूं	हम देखी गई हैं
तू देखी गई है	तुम देखी गई हो
वह देखी गई है	वे देखी गई हैं

३ पूर्णभूतकाल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया था	हम देखे गये थे
तू देखा गया था	तुम देखे गये थे
वह देखा गया था	वे देखे गये थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई थी	हम देखी गई थीं
तू देखी गई थी	तुम देखी गई थीं
वह देखी गई थी	वे देखी गई थीं

४ संदिग्धभूतकाल

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया होऊंगा	हम देखे गये होवेंगे
तू देखा गया होगा	तुम देखे गये होओगे
वह देखा गया होगा	वे देखे गये होवेंगे

२३४ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता	हम देखे जाते
तू देखा जाता	तुम देखे जाते
वह देखा जाता	वे देखे जाते

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती	हम देखी जातीं
तू देखी जाती	तुम देखी जातीं
वह देखी जाती	वे देखी जातीं

२ सामान्यवर्त्तमानकाल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता हूं	हम देखे जाते हैं
तू देखा जाता है	तुम देखे जाते हो
वह देखा जाता है	वे देखे जाते हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती हूं	हम देखी जाती हैं
तू देखी जाती है	तुम देखी जाती हो
वह देखी जाती है	वे देखी जाती हैं

३ अपूर्णभूतकाल

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता था	हम देखे जाते थे
तू देखा जाता था	तुम देखे जाते थे
वह देखा जाता था	वे देखे जाते थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती थी	हम देखी जाती थीं
तू देखी जाती थी	तुम देखी जाती थीं
वह देखी जाती थी	वे देखी जाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता होऊंगा	हम देखे जाते होवेंगे
तू देखा जाता होगा	तुम देखे जाते होश्रोगे
वह देखा जाता होगा	वे देखे जाते होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती होऊंगी	हम देखी जाती होवेंगी
तू देखी जाती होगी	तुम देखी जाती होश्रोगी
वह देखी जाती होगी	वे देखी जाती होवेंगी

२१५ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं॥

१ विधिक्रिया।

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें
तू देखा जा	तुम देखे जाश्रो
वह देखा जावे	वे देखे जावें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
देखे जाइये	देखेजाइयो

२ संभाव्यभविष्यत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें वा जायें
तू देखा जावे वा जाय	तुम देखे जाश्रो वा जावो
वहदेखाजावे वा जाय	वे देखेजावें वा जायें

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊं	हम देखी जावें वा जायें
तू देखी जावे वा जाय	तुम देखी जाश्रो वा जावो
वह देखी जावे वा जाय	वे देखी जावें वा जायें

३ सामान्यभविष्यत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊंगा	हम देखे जावेंगे वा जायेंगे
तू देखा जावेगा वा जायगा	तुम देखे जाश्रोगे वा जावोगे

वह देखा जावेगा वा जायगा वे देखे जावेंगे वा जायेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊंगी हम देखी जावेंगी वा जायेंगी

तू देखी जावेगी वा जायगी तुम देखी जाओगी वा जावोगी

वह देखी जावेगी वा जायगी वे देखी जावेंगी वा जायेंगी

२१६ कहआयेहैं कि सामान्यभूत कालकी क्रिया बनाने की यह रीति है कि हलन्त धातु के एक वचनमें या और बहुवचन में ए लगा देते हैं परन्तु एक हलन्त धातुकी क्रिया है अर्थात करना और पांच स्वरान्त धातु की क्रियाहैं अर्थात देना पीना लेना होना और जाना जिनकी भूतकालिकक्रिया पूर्वोक्त साधारण रीतिके अनुसार बनाई नहीं जातीं उनकोआदरपूर्वक विधि और परोक्षविधि क्रियाभी साधारणरीति के अनुरोध नहीं होतीं इस कारण उन्हें नीचे के चक्र में एकत्र लिख देते हैं ॥

साधारणरूप	सामान्यभूत काल ।				आदरपूर्वकविधि	परोक्षविधि
	एकवचन		बहुवचन			
	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		
करना	किया	की	किये	कीं	कीजिये	कीजियो
देना	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये	दीजियो
पीना	पिया	पी	पिये	पीं	पीजिये	पीजियो
लेना	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये	लीजियो
होना	हुआ	हुई	हुए	हुईं	हूजिये	हूजियो
जाना	गया	गई	गये	गईं		

२१७ जान पड़ताहै कि संस्कृत धातु कृ के कुछ विकार करने से हिन्दी की दो एकार्थक क्रिया निकलीहैं अर्थात कीना और करना इन के सामान्यभूत और आदरपूर्वक विधि क्रिया ये हैं ॥

करना का सामान्यभूत करा आदरपूर्वक विधि करिये

कीना „ „ किया „ „ कीजिये

२३८ इनदिनों में करा और करिये ये रूप प्रचलित नहीं हैं पर उनके स्थान में किया और कीजिये ऐसे रूप होते हैं। कीना भी अप्रचलित हुआहै परन्तु उसकी जगह में करना आता है॥

२३९ देना पीना लेना होना इन चारों की भूतकाल और विधि क्रिया के बनाने में जो विशेषता होती है सो प्रायः उच्चारणकी सुगमता के निमित्त है॥

२४० बुद्धि में आताहै कि दो एकार्थक संस्कृत धातु अर्थात या और गम् से जाना क्रिया के समस्त रूप बनाये हैं या के यकार को ज आदेश करके ना चिह्न लगाने से साधारण रूप जाना बनता है जिसकी सामान्यभूतकाल की क्रिया अर्थात गया गमसे निकली है॥

२४१ भया यह एक क्रियाहै जो भूत काल छोड़ के और किसी कालमे नहीं होती। सम्भव है कि संस्कृत धातु भू से निकलीहै या होना धातु के सामान्यभूत के ही दोनोंरूप हैं अर्थात कोईहुआ और कोईर इसीको भया भी कहते हैं॥

२४२ कहआये हैं कि क्रिया दो प्रकारकी होती है अकर्मक और सकर्मक इनको छोड़ के और भी एकप्रकार की क्रिया है जिसे प्रेरणार्थक कहते हैं इसकारण कि उससे प्रेरणा समझी जातीहै॥

प्रायः अकर्मक क्रिया से सकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया बनतीं अब उनके बनाने की रीति बताते हैं॥

२४३ अकर्मकको सकर्मक बनाने की साधारण रीति यह है कि धातु के अंत्य व्यंजन से आ मिला देते हैं और अकर्मकको प्रेरणार्थक रचने के लिये वा मिलाया जाता है। यथा

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
दबना	दबाना	दबवाना
बजना	बजाना	बजवाना
लगना	लगाना	लगवाना

२४४ प्रायः तीन अक्षरकी सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपरकी रीतिके अनुसार बनाईजाती है परन्तु सकर्मकके बनाने में दूसराअक्षर हल होजाता है अर्थात उसके स्वरका लोप होताहै। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
चमकना	*चम्काना	चमकवाना
पिघलना	पिघ्लाना	पिघलवाना
बिथरना	बिथ्राना	बिथरवाना
भटकना	भट्काना	भटकवाना
सरकना	सर्काना	सरकवाना
लटकना	लट्काना	लटकवाना

२४५ यदि दो अक्षर का अकर्मक धातु हो और उसके बीच में दीर्घस्वर रहे तो उसे ह्रस्व करके आ और वा मिला देने से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
घूमना	घुमाना	घुमवाना
जागना	जगाना	जगवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
डूबना	डुबाना व डबोना	डुबवाना
भीगना	भिगाना वा भिगोना	भिगवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना

२४६ कई एक सकर्मक और कई एक अकर्मक धातु हैं जिनका स्वर ह्रस्व करके ला और लवा लगाने से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बन जाती हैं। यथा

सकर्मक।	द्विकर्मक।	प्रेरणार्थक।
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना

---

*इन में हल का लक्षण लिखा है परन्तु लिखनेवाले की इच्छा है चाहे लिखे चाहे न लिखे।

सीना	सिलाना	सिलवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
बैठना	बिठाना	बिठवाना
* रोना	रुलाना	रुलवाना

२४७ कितने एक अकर्मक धातुके पहिले अक्षर के स्वरको दीर्घ करदेने से सकर्मक क्रिया होजातीहै परन्तु प्रेरणार्थकके रचने में स्वर का विकार नहीं होता केवल वा के मिलाने से बनजातीहै । जैसे

अकर्मक ।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक ।
कटना	काटना	कटवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
गड़ना	गाड़ना	गड़वाना
पलना	पालना	पलवाना
मरना	मारना	मरवाना
लदना	लादना	लदवाना

२४८ कोईर अकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नियम विरुद्ध हैं। जैसे

अकर्मक ।	सकर्मक ।	प्रेरणार्थक ।
छुटना	छोड़ना	छुड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
रहना	रखना	रखवाना

२४९ आना जाना सकना होना आदि कितनीएक ऐसी अकर्मक क्रिया हैं जिनसे सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती हैं ॥

---

* खाना और लेना इनके द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपर की रीति के अनुसार बनती हैं परन्तु उनके पहिले अक्षर का स्वर इ हो जाता है जैसे खाना खिलाना लेना लिवाना ॥

संयुक्त क्रियाके विषय में ।

२५० हिन्दी में अनेक क्रिया होती हैं जो और क्रियाओं से मिलके आती हैं और नवीन अर्थ को उत्पन्न करती हैं ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं । संयुक्त क्रिया में प्रायः दो भिन्न क्रिया होती हैं परंतु कहीं कहीं तीन २ आती हैं ॥

२५१ चेत रखना चाहिये कि संयुक्त क्रिया के आदि का क्रिया मुख्य है उसी से संयुक्त क्रिया का अर्थ समझा जाता है और उसी के अनुसार संयुक्त क्रिया अकर्मक वा सकर्मक जानी जाती है ॥

२५२ संयुक्त क्रिया नाना प्रकार की हैं पर उनकी मुख्य क्रिया को मान करके उनके तीन भाग किये हैं । पहिला भाग वह है जिस में आदि की क्रिया धातु के रूप से आती है । दूसरा भाग वह है जिसमें आदि की क्रिया सामान्यभूत के रूप से रहती है । और तीसरा भाग वह है जिस में आदि की क्रिया अपने साधारण रूप से होती है ॥

२५३ पहिले उन्हें लिखते हैं जिनमें मुख्य क्रिया धातुके रूप से आती है वे तीन प्रकार की हैं अर्थात अवधारणबोधक शक्तिबोधक और पूर्णता बोधक ॥

२५४ १ अवधारणबोधक—आना उठना जाना डालना देना पड़ना बैठना रहना लेना ये सब और क्रियाओं के धातु से मिलके आती हैं। देना और लेना अपने २ धातु से भी मिलके आते हैं । जैसे

देख-आना	गिर-पड़ना
बोल-उठना	मार-बैठना
खा-जाना	हो-रहना
काट-डालना	पकड़-लेना
रख-देना	दे-देना
चल-देना	ले-लेना

२५५ २ शक्तिबोधक—सकना क्रिया परतन्त्र कहाती है इसकारण कि वह अकेली नहीं आती पर और क्रियाओंके धातु से मिलके शक्तिबोधक हो जाती है । जैसे

चल—सकना	बोल—सकना
पढ़—सकना	उठ—सकना
लिख—सकना	दे—सकना

२५६ ३ पूर्णताबोधक—और क्रियाओं के धातु के साथ चुकना क्रिया के आने से पूर्णताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है। जैसे

खा—चुकना	कह—चुकना
मार—चुकना	हो—चुकना
देख—चुकना	कर—चुकना

२५७ जिन में मुख्य क्रिया सामान्यभूत काल के रूपसे आती है वे दो प्रकार की हैं अर्थात नित्यताबोधक और इच्छाबोधक॥

२५८ १ नित्यताबोधक—सामान्यभूत कालिक क्रिया के साथ लिंग वचन और पुरुष के अनुसार करना क्रिया के आनेसे नित्यताबोधक क्रिया हो जाती है। जैसे

किया—करना	कहा—करना
दिया—करना	*आया—करना
देखा—करना	आया जाया—करना

२५९ २ इच्छाबोधक—सामान्यभूत कालिक क्रिया से परे चाहना क्रिया के लगाने से व्यापार करने को कर्त्ताकी इच्छा जानी जाती है। जैसे

आया—चाहना	बोला—चाहना
*जाया—चाहना	मारा—चाहना
देखा—चाहना	सीखा—चाहना

२६० इस प्रकार की संयुक्त क्रिया से कहीं २ ऐसा बोधभी होता है कि क्रिया का व्यापार होने पर है। जैसे वह गिरा चाहता है वह मरा चाहता है घड़ी बजा चाहती है इत्यादि॥

२६१ संयुक्त क्रिया जिनमें आदि की क्रिया साधारण रूप से आती है सो दो प्रकार की हैं अर्थात आरम्भबोधक और अवकाशबोधक॥

---

* जाना की सामान्यभूत कालिक क्रियाका साधारण रूप गया होता है किन्तु संयुक्त क्रियाओं में गया नहीं परंतु जाया नित्य आता है॥

२६२ १ आरम्भबोधक—मुख्यक्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश कर लिंग वचन और पुरुष के अनुसार लगना क्रिया के मिलाने से आरम्भबोधक क्रिया हो जाती है। जैसे

खाने—लगना	बोने—लगना
चलने—लगना	सोने—लगना
देने—लगना	होने—लगना

२६३ २ अवकाशबोधक—मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश करके देना वा पाना क्रिया के लगाने से लिंग वचन और पुरुष के अनुसार अवकाशबोधक क्रिया बनती है। जैसे

जाने—देना	जाने—पाना
बोलने—देना	उठने—पाना
सोने—देना	चलने—पाना

२६४ ध्यान—करना—मर—जाना चुप—रहना सुध—लेना इत्यादि भिन्न क्रिया हैं। बोलना चालना—देखना—भालना चलना—फिरना कूदना—फांदना समझना—बूझना इत्यादि सकर्मक ही दोक्रिया हैं॥

इति क्रिया प्रकरण॥

छठवां अध्याय॥

कृदन्त के विषय में।

२६५ क्रिया से परे जो ऐसे प्रत्यय होते हैं कि जिनसे कर्तृत्व आदि समझे जाते हैं तो उन्हें कृत कहते हैं और कृत के आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रिया वाचक संघा कहते हैं इसकारण कि प्रायः क्रिया के सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं॥

२६६ हिन्दी में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात कर्तृवाचक कर्मवाचक करणवाचक भाववाचक और क्रियाद्योतक। उनके बनाने की रीति नीचे लिखते हैं॥

१ कर्तृवाचक।

२६७ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिससे कर्तापन का बोध होता है। उनके बनाने की रीति यह है कि क्रियाके साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश करके उसके आगे हारा वा वाला लगा देते हैं। जैसे

मारनेहारा वा मारनेवाला बोलनेहारा वा बोलनेवाला इत्यादि ॥ कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग हो तो हारा और वाला के अंत के आ को ई कर देते हैं। जैसे मारनेहारी बोलनेवाली ॥

२६८ क्रियाके धातुसेभी अक इया वा वैया प्रत्यय करनेसे कर्तृवाचक संज्ञा हो जाती हैं। जैसे पालनेसे पालक पूजनेसेपूजक जड़नेसेजड़िया लखने से लखिया चलने से चलवैया जीतने से जितवैया इत्यादि ॥

२६९ यदि धातु का स्वर दीर्घहो तो वैया प्रत्ययके लगानेपर उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे खाने से खवैया गाने से गवैया आदि जानो ॥

२ कर्मवाचक ।

२७० कर्मवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके कहनेसे कर्मत्वसमझा जाता है वह सकर्मक ही क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि सकर्मक क्रिया के साधारण रूप के चिन्ह ना को पुल्लिङ्ग में आ और स्त्रीलिङ्ग में ई आदेश कर देते हैं अथवा उस रूपके साथहुआ लगा देते हैं। जैसे देखा देखी वा देखा हुआ देखी हुई कियाकी वा किया हुआ की हुई आदि ॥

३ भाववाचक ।

२७१ कह आये हैं कि भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस के कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझाजाय अथवा जिससे किसी व्यापार का बोध हो। व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकारसे बनाई जाती हैं। जैसे

२७२ १ बहुधा क्रिया के साधारण रूपके ना का लोप करके जो रह जाती है वही भाववाचक संज्ञा है। जैसे बोल दौर पुकार समझ मान चाह लूट आदि ॥

२७३ २ कहीं कहीं साधारण रूप के ना को आव आदेश करनेसे भाववाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे बिकाव मिलाव चढ़ाव आदि ॥

२७४ ३ कहीं कहीं क्रिया के साधारण रूपके अंत्य आ का लोप करने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे लेन देन खान पान आदि ॥

२७५ ४ कहीं२ क्रियाके साधारणरूपके नाका लोपकरके आईकेलगाने से भाववाचकसंज्ञा होतीहै। जैसे आई सनाई ठगाई दिखाई इत्यादि ॥

२७६ . ४ कहीं कहीं क्रियाके साधारण रूपके ना का लोपकरके वट या हट प्रत्यय करनेसे भाववाचक संज्ञा होतीहै । जैसे अमावट घुमावट सिकावट चिल्लाहट झंझनाहट इत्यादि ॥

५ करणवाचक ।

२७७ करणवाचक संज्ञा उसे कहतेहैं जिसके कहने से ज्ञात होता है कि जिसकेद्वारा कर्ता व्यापारको सिद्ध करता है । उसके बनाने की यह रीति है कि क्रियाके साधारण रूपके अंत्य ना को ई आदेश कर देतेहैं । जैसे ओढ़नी कतरनी कुरेलनी घोटनी कंकनी खोदनी इत्यादि ॥

२७८ कहीं कहीं क्रियासे धातुसे आ लगादेतेहैं । जैसे घेरा फेरा झूला आदि । कोई कोई धातु हैं जिन से ना प्रत्यय करने से करण वाचक संज्ञा होजाती है । जैसे बेलना इत्यादि ॥

६ क्रियाद्योतक ।

२७९ क्रियाद्योतक संज्ञा उसे कहतेहैं जो संज्ञा का विशेषणहोके निरन्तर क्रिया को बतावे उसके बनाने की यह रीति है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य ना को ता करनेसे क्रियाद्योतक संज्ञा होजाती है अथवा उसके आगे हुआ लगादेते हैं । जैसे देखता वा देखता हुआ बोलता वा बोलता हुआ मारता वा मारता हुआ इत्यादि ॥

सातवां अध्याय

अथ कारक प्रकरण ।

२८० व्याकरण के उस भाग को कारक कहतेहैं जिसमें पदों की अवस्थाओं का वर्णन होता है ॥

प्रथम अर्थात् कर्त्ता कारक ।

२८१ प्रातिपदिकार्थ अर्थात् संज्ञाकेअर्थकी उपस्थिति जहां नियम पूर्वक रहती है वहां प्रथम अर्थात् कर्त्ता कारक होताहै । जैसे बुद्धि देव ऊंचा नीचा आदि ॥

२८२ जहां पर लिंग वा परिमाण अथवा संख्या का प्रकाश करना अपेक्षित रहताहै वहां प्रथम कारक बोलाजाताहै । जैसे लड़का लड़की आधसेर घी आधसेर चीनी एक दो बहुत इत्यादि ॥

२७६ क्रिया के व्यापार का करनेहारा जब प्रधान * अर्थात् उक्त होताहै तब प्रथम कारक कहलाताहै। जैसे बालक खेलता है लड़कियां दौड़ती थीं वृक्ष फलेगा इत्यादि॥

२७७ क्रियाके व्यापार का फल जिस में रहता है वह जब उक्त होजाताहै तब उसमें प्रथम कारक होताहै। जैसे पोथी बनाई जाती है वृत्तान्त लिखे जाते हैं॥

२७८ उद्देश्य विधेयभावमें अर्थात् जब संज्ञा संज्ञाका विधेयहोजाती है विधेयवाचक संज्ञा का कर्त्ता कारकहोताहै। जैसे ज्ञान सब से उत्तम धनहै सोना रूपा लोहा आदि धातु कहाते हैं उसका हृदय पत्थर होगया है॥

२७९ यदि एकही कर्त्ता की दो वा अधिकक्रियाहों तो कर्त्ता केवल प्रथम क्रियाके साथ उक्त होताहै शेष क्रियाओं के साथ उसका अध्याहार किया जाताहै। जैसा वह दिन दिन खाता पीता सोता जागता है वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं॥

द्वितीय अर्थात् कर्म कारक।

२८० क्रियाके व्यापार का फल जिसमें रहै और वह अनुक्त होवे तो उसमें द्वितीय कारक होजाता है। जैसे रामको मारताहै तारों को देखता है फूलों को बटोरता है॥

---

*ध्यान रखना चाहिये कि कर्त्ता दो प्रकारका है प्रधान और अप्रधान। प्रधान उस कर्त्ता को कहते हैं जिसके लिंग वचन और पुरुषके अनुसार क्रिया के लिंग आदि होते हैं। जैसे गुरु चेलों को सिखाता है इस वाक्य में गुरु प्रधान कर्त्ता है इसकारण कि जो लिंग आदि उस में हैं सोही क्रियामें हैं। अप्रधान कर्त्ताके साथ ने चिन्ह आताहै और उसकी क्रिया के लिंग और वचन कर्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे पण्डितने पोथी लिखी लड़केने लड़की मारी उसने घोड़े बेचे। जब कर्म कारक अपने चिन्ह को के साथ आता है तब क्रिया सामान्य पुलिङ्ग अन्यपुरुष एक वचनमेंहोतीहै कर्म पुलिङ्ग हो वा स्त्रीलिंग हो। जैसे पण्डित ने पोथी को लिखाहै लड़की ने रोटी को खायाहै॥

१४८ अपादान आदि कारक की विवक्षा जब नहीं होती और कर्म नहीं रहता है तो वहां अपादान आदि कारकों के स्थानमें मुख्य कर्म को छोड़कर द्वितीय कारक होजाता है। जैसे आज मेरी गैया को कौन दुहेगा अर्थ यहहै कि मेरी गैया से आज दूध को कौन दुहेगा ॥

१४९ कर्म कारक का चिन्ह को बहुधा लोप होताहै परन्तु उसके लोप करने की कोई दृढ़ रीति नहीं है। कोई २ वैयाकरण समझते हैं कि उसका लाना और न लाना विवक्षा के आधीनहै परन्तु औरों की बुद्धि में सामान्य वर्णन वा विशेष वर्णन मानकर उसका लोपकरना वा उसे लाना चाहिये। जैसे वह तुलसीदास के रामायण को पढ़ता है यहां विशेष रामायण अर्थात तुलसीकृत रामायणकी चर्चा है वाल्मीकी की नहीं ॥

१५० अप्राणी वाचक संज्ञाका कर्मकारकहो तो प्रायः चिन्ह रहित होगा। जैसे मैं चिट्ठी लिखताहूं तुम आके काम करो वह फल तोड़ता है इत्यादि। व्यक्तिवाचक अधिकारवाचक और व्यापार कर्तृवाचक संज्ञा के कर्म में प्रायः को लगाना चाहिये। जैसे मोहनलालको बुलाओ चौधरी को भेजदेना वह अपने दास को मारताहै इत्यादि ॥

१५१ यदि एकही वाक्यमें कर्म कारक और संप्रदान कारक भी आवें तो उच्चारण की सुगमता के निमित्त प्रायः कर्म के चिन्ह का लोप होता है। जैसे दरिद्रों को दान दो ॥

तृतीय अर्थात करणकारक।

१५२ जिसके द्वारा कर्ता क्रियाको सिद्ध करताहै उसे करण कहते हैं करण में तृतीय कारक होता है। जैसे लेखनी से लिखते हैं पांव से चलते हैं छूरीसे आम को काटते हैं खड्गसे शत्रुओंको मारते हैं ॥

१५३ हेतु द्वारा और कारण इनके योगमें तृतीय कारक होताहै। जैसे इस हेतु से मैं वहां नहीं गया आलस्य के हेतुसे वह समय पर न पहुंचा वह अपनी अज्ञानता के कारण उसे समझ नहीं सकता इस कारण से उसका निवारण मैं नहीं करसकता ज्ञानके द्वारा मोक्ष होता है मंत्री के द्वारा राजासे भेंटहुई ॥

२६४ विशेषता यह है कि जब हेतु वा कारण के साथ योग होता है तो कारक के चिन्ह का लोप वक्ता की इच्छा के आधीन रहता है परंतु जब द्वारा शब्द का संयोग रहे तो अवश्य कारक के चिन्ह का लोप करना उचित है ॥

२६५ क्रिया करने की रीति वा प्रकार के बताने में करण कारक आता है। जैसे उसने उनपर क्रोध से दृष्टि की वह सारी शक्ति से यत्न करता है जो कुछ तुम करो सो अन्तःकरण से करो इस रीति इस प्रकार से ॥

२६६ मूल्य वाचक संज्ञा में प्रायः करण कारक होता है। जैसे कल्याण वचन से मोल नहीं सकते अनाज किस भाव से बेचते हैं दो सहस्र रुपयों से हाथी मोल लिया ॥

२६७ जिस से कोई वस्तु अथवा व्यक्ति उत्पन्न होवे उसको करण कारक कहते हैं। जैसे कपास ऊन आदि से वस्त्र बनता है दूध से घी उत्पन्न होता है ध्यान से सामर्थ्य प्राप्त होता है पाप से आप कुछ नहीं हो सकता है ॥

२६८ किसी क्रिया का कर्त्ता जब उक्त नहीं रहता तो उस कर्त्ता में तृतीय कारक होता है। जैसे मुझसे लड़के नहीं उठा जाता। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसके कर्म में प्रथम कारक होगा। जैसे तुमसे यह नहीं मारा जायगा। यदि क्रिया द्विकर्मक होवे तो उसके मुख्य कर्म में प्रथम कारक होगा परंतु गौण कर्म जो संप्रदान कारक के रूप से आता है उसे द्वितीय कारक होगा। जैसे मुझसे पैसे उसको नहीं दिये जाते ॥

२६९ इस कारक के चिन्ह का लोप अनेक स्थानों में होता है। जैसे न आंखों देखा न कानों सुना मेरे हाथ चिट्ठी भेजता है ॥

चतुर्थ अर्थात सम्प्रदान कारक ।

२७० जिसके लिये देते हैं उसे संप्रदान कहते हैं। संप्रदान में चतुर्थ कारक होता है। जैसे दरिद्रों को धन दो हमको पीने का जल दो इत्यादि ॥

२७१ जिस लिये वा जिसके निमित्त कुछ किया जाता है उसके प्रकाश करने में संप्रदान कारक होता है। जैसे भोजन बना

(वा थमाने के लिये) बनिये से सीधा मोलातेहैं वे स्नानको गयेहैं वे तुम से मिलने को आते थे ॥

३०२ योग्यता उपयुक्तता और निषेधादि के बतानेमें यहकारक आता है। जैसे यह तुमको योग्य नहींहै यहतुमको उचितनहींहै लड़कों को चाहिये कि माता पिता की आज्ञा को मानें ॥

३०३ कहींर आवश्यकता के प्रकाश करनेमें चतुर्थ कारकहोता है। जैसे अबमुझको जानाहै तुमको आनाहोगा उसको अबपाठ सीखना है ॥

३०४ नमस्कार स्वस्ति आदि शब्दके योगमें चतुर्थ कारक होता है जैसे राजा और प्रजाके लिये स्वस्तिहो आपको नमस्कार श्रीसच्चिदानन्द मूर्त्तयेनमः। विशेष यहहै कि प्रायः हिन्दीमें भी नमः के साथ योगहोने से संस्कृत काही चतुर्थ्यन्त पद बोलतेहैं। जैसे प्रायःपुस्तकों में भी परमात्मने नमः इत्यादि लिखते हैं ॥

पञ्चम अर्थात् अपादान कारक।

३०५ विभाग के स्थान का ज्ञान जिस से होता है उसे अपादान कहतेहैं अपादान में पञ्चम कारक होताहै। जैसे पर्वतसे गिरा है घर से आयाहै नगर से गया है ॥

३०६ भिन्नता परिचय अपेक्षा अर्थकाबोध हो तो अपादान कारक होगा। जैसे यह उससे जुदाहै यह इससे भिन्न है जिसको वेदान्तियों के सब सिद्धान्तों से अच्छा परिचय होगा वह ऐसी शंका में न पड़ेगा दयानन्दस्वामी से मेरा परिचय हुआहै बुद्धिमान शत्रु बुद्धिहीन मित्र से उत्तमहै धनसे विद्या श्रेष्ठ है ॥

३०७ परे रहित आदि शब्द के संयोग में पञ्चमकारक होता है। जैसे मेरे घर से परे वाटिका है नदी से परे कोस भर पर मेरा मित्र रहता है हमारे माता पिता अब चलने फिरने से रहित होगये हैं यह मनुष्य विद्या से रहित है।

[illegible] निर्धारण अर्थ से अर्थात् जब वस्तुओं के समूह में से एक [illegible] वा व्यक्तिका निश्चय कियाजाताहै तो अधिकरण और अपादान दोनों [illegible] विभक्तियां आती हैं। जैसे पर्वतों में से हिमालय अच्छा है कवियों [illegible] कालिदास अच्छा है ॥

षष्ठ अर्थात सम्बंध कारक ।

३०९ जिस कारक से स्वत्व स्वामित्व प्रकाशित होता है उसे सम्बंध कहते हैं । सम्बंध में छठा कारक होता है । जैसे राजा की सेना पण्डित का पुत्र लड़के के कपड़े इत्यादि ॥

३१० कार्य कारण में भी सम्बंध होताहै । जैसे बालू की भीत सोने के कड़े चांदीकी डिबिया मिट्टी का घड़ा पृथिवी का खण्ड ॥

३११ तुल्य समान सदृश आधीन आदि शब्द के योग में सम्बंध कारक होता है । जैसे यहउसके तुल्य नहीं है पृथिवी गेंद के समान गोल है उसका मुँह चांद के सदृश है मैं आज्ञा के अनुसार सब कुछ कहूंगा स्त्रियोंको चाहिये कि अपनेर पतिके आधीन रहें ॥

३१२ कर्तृ कर्मभाव सेव्यसेवकभाव जन्य जनकभाव और अंगांगिभाव में सम्बंध कारक होताहै । जैसे तुलसीदास का रामायण बिहारीकी सतसई महाराजा की सेना रानी की बेटी सिर का बाल हाथ की उंगली इत्यादि ॥

३१३ परिमाण मूल्य काल वयस योग्यता शक्ति आदि के प्रकाश करने में सम्बंध कारक होताहै । जैसे दो हाथकी लाठी बड़ेपाटकी नदी कोसभरकी सड़क बारह एक बरस की लड़की यह तीस बरस की बात है यह कहने के योग्य नहीं है यह रोग्य अब ठहरनेका नहीं है ॥

३१४ समस्तता भेद समीपता आधीनता आदिके प्रकाश करनेमें सम्बंध कारक होताहै । जैसे खेतका खेत सब के सब आकाश और पृथिवी का भेद मैं उसके घर के समीप गया ॥

३१५ केवल धातु वा भाववाचक के प्रयोग में सकर्मक क्रिया के कर्म को सम्बंध कारक होता है । जैसे रोटीका खाना गांवकी लूट ॥

सप्तम अर्थात् अधिकरण कारक ।

३१६ क्रिया का जो आधारहै उसे अधिकरण कहते हैं । अधिकरण में सप्तम कारक बोलते हैं । जैसे वह घरमें है पेड़ पर पक्षी है वह नदी तीर पै खड़ा है ॥

३१७ आधार तीन प्रकार का है औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक। औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिससे किसी अवयव से संयोग हो। जैसे वह चटाई पर बैठता है वह कटलोही में रींधता है। वैषयिक उस आधार का नामहै जिससे विषयका बोध हो। जैसे मोक्ष में उसकी इच्छा लगी है अर्थात उसकी इच्छाका विषय मोक्ष है। और अभिव्यापक वह आधार है जिसमें आधेय सम्पूर्ण रूप से व्याप्त हो। जैसे आत्मा सबमें व्याप्त है वन से दूर वा निकट * ॥

३१८ निर्धारण अर्थ में अधिकरण होताहै। जहां अनेकके मध्य में एकका निश्चय होता है वहां निर्धारण जानो। जैसे पशुओं में हाथी बड़ा है पत्थरों में हीरा बहुमूल्य है॥

३१९ हेतु के प्रकाश करने में सप्तम और पञ्चम दोनों कारकहोते हैं। जैसे ऐसाकरो जिसमें वह कार्य सिद्ध हो वा ऐसा कहो जिस से प्रयोजन सिद्ध हो॥

आठवां अध्याय॥

तद्धित प्रकरण।

३२० तद्धित उसे कहते हैं जिससे संज्ञा के अन्त में प्रत्ययों के लगाने से अनेकशब्द बनतेहैं। जो हिन्दीमें व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं॥

३२१ तद्धित के प्रत्यय स अपत्यवाचक कर्तृवाचक भाववाचक ऊनवाचक और गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती हैं। जैसे

३२२ १ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचकसे निकलतीहैं। नामवाचक के पहिले स्वरको वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होनेसे जैसे शिवसे शैव विष्णु से वैष्णव गोतम से गौतम मनु से मानव वशिष्ठ से वाशिष्ठ महानन्द से महानन्दी रामानन्द से रामानन्दी हुआ है॥

३२३ २ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिससे किसी क्रिया के व्यापारका कर्त्ता समझाजाय संज्ञासे हारा वाला और इया इन प्रत्ययों

---

* सत्यकौमुदी पृ० ४६६।

के लगाने से बनती है। जैसे चुरिहारा दूधवाला अकलिया मकनिया इत्यादि॥

३२४ १ भाववाचक संज्ञा और संज्ञा से इन प्रत्ययों के लगानेसे बनती है जैसे आई ई त्व ता पन पा वट हट। इनके उदाहरण ये हैं चतुराई मोटाई लड़काई लम्बाई मनुष्यत्व स्त्रीत्व उत्तमता मित्रता लड़कपन बुढ़ापा बनावट कड़वाहट चिकनाहट इत्यादि॥

३२५ २ ऊनवाचक संज्ञा प्रायः आ की ई आदेश करने से होजाती है। जैसे रस्सा रस्सी गोला गोली लड़का लड़की टोकड़ा टोकड़ी डाला डाली इत्यादि॥

३२६ कहीं कहीं अक वा इया के लगाने से भी ऊनवाचक संज्ञा बनती है। जैसे मानव मानवक वृक्ष वृक्षक खाट खटिया डिब्बा डिबिया आम अँबिया इत्यादि॥

३२७ ४ गुणवाचक संज्ञा तद्धित की रीति से उत्पन्न होतीहै नीचे के प्रत्ययों के लगाने से। जैसे

आ—ठंढ ठंढा प्यास प्यासा भूख भूखा मैल मैला इत्यादि॥

इक—यह प्रत्यय प्रायः संस्कृत गुणवाचक संज्ञाओं का है। संज्ञा के पहिले अक्षरका स्वर वृद्धिसे दीर्घ करके इक लगाते हैं जैसे प्रमाण से प्रामाणिक शरीर से शारीरिक संसार से सांसारिक स्वभाव से स्वाभाविक धर्म्म से धार्म्मिक हुआ है॥

इत—आनन्द आनन्दित दुःख दुःखित क्रोध क्रोधित शोक शोकित॥

इय वा इया—समुद्र समुद्रिय झांझ झांझिया खटपट खटपटिया॥

ई—ऊन ऊनी धन धनी धर्म धर्मी भार भारी बल बली॥

ईला एला वा ऐल—रस रसीला रंग रंगीला घर घरैला बन बनैला॥

लु लू वा ल—दया दयालु झगड़ा झगड़ालू कृपा कृपाल॥

वन्त—कुल कुलवन्त बल बलवन्त दया दयावन्त॥

वान—आशा आशावान क्षमा क्षमावान ज्ञान ज्ञानवान रूप रूपवान॥

इति तद्धित प्रकरण॥

नवां अध्याय ॥

समास के विषय में ।

३२८ विभक्ति सहित शब्द पद कहाता है । यथा प्रत्येक पद में विभक्ति होती है। कभी दो तीन आदि पद अपनी २ विभक्ति त्यागकरके मिल जाते हैं उनके मिलाने से एकशब्द बनजाता है जिसमें विभक्ति का रूप नहीं परंतु उसका अर्थ रहता है। जैसे प्रेमसागर इस उदाहरण में दो शब्द हैं अर्थात प्रेम और सागर उनका पूरा रूप यह था कि प्रेम का सागर पर का के लोप करने से प्रेमसागर एक शब्द बनगया । इसी रीति से तीनि आदि पद के योग को भी समास कहते हैं ॥

३२९ समास छः प्रकार के होते हैं अर्थात १ कर्मधारय २ तत्पुरुष ३ बहुब्रीहि ४ द्विगु ५ द्वन्द्व ६ अव्ययीभाव ॥

३३० १ कर्मधारय समास उसे कहते हैं जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सामानाधिकरण्य हो । जैसे परमात्मा महाराज सज्जन नील कमल चंद्रमुख इत्यादि ॥

३३१ २ तत्पुरुष समास वह है जिस में पूर्व पद कर्त्ता छोड़के दूसरे कारक की विभक्ति से युक्त हो और पर पदका अर्थ प्रधान होवे तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तर पद प्रधान होता है इस कारण कि स्वतंत्रता से उन्हींका अन्वय क्रियामें होता है । जैसे प्रियवादी नरेश इनमें वादी और ईश शब्द प्रधान हैं पूर्व पदका अन्वय क्रिया में नहीं है । इसी रीति से हिमालय जन्मस्थान विद्याहीन बुद्धिरहित यज्ञस्तम्भ शरणागत ग्रामवास इत्यादि जानो ॥

३३२ ३ बहुब्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि पद मिलके समस्त पद के अर्थ बोध के साथ और किसी पद से सम्बंध रखे । जैसे नारायण चतुर्मुख । इन शब्दों का अर्थ है जल स्थान और चार बांह परंतु इनसे विष्णु ही का बोध होताहै अर्थात जिसका जल स्थान है और चार बांह हैं वह विष्णु समझा जाताहै। बहुब्रीहि समाससे जो पद सिद्ध होताहै वह प्रायः विशेषण होजाता-

है और विशेष्य के लिंग विभक्ति और वचन प्राप्त करता है। इसी रीति से दिगम्बर मृगलोचन पीताम्बर श्यामकर्ण दुराचार दीर्घबाहु इत्यादि जानो ॥

३३३ ४ द्विगु समास उसे कहते हैं जिसमें पूर्व पद संख्या वाचक हो उत्तर शब्द चाहे जैसा हो। यह समास बहुधा समाहार अर्थ में आता है। यथा चतुर्युग चतुर्वर्ण त्रिलोक त्रिभुवन पञ्चरत्न इत्यादि ॥

३३४ ५ द्वन्द्व समास उसे कहते हैं जहां जिन पदों से समास होता है उन सभों का अन्वय एकही क्रियामें हो। जैसे हाथ पांव बांधो इस उदाहरण में हाथ और पांव दोनों का अन्वय बांधो क्रियाके साथ है। इसी रीतिसे पिता माता गुरुशिष्य रातदिन जातिकुटुम्ब चहलपहल लेन देन इत्यादि जानो ॥

३३५ ६ अव्ययीभाव समास वह है जिस में अव्ययके साथ दूसरे शब्द का योग हो वह क्रियाविशेषण होता है। जैसे प्रतिकाल अनुरूप निर्भय यथाशक्ति प्रतिदिन इत्यादि ॥

दसवां अध्याय ॥

अव्यय के विषय में।

३३६ कहचुके हैं कि अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिंग वचन वा कारक के कारण विकार नहीं होता अर्थात जिसका स्वरूप सदा एकसा रहता है। जैसे अब और वा भी फिर इत्यादि ॥

३३७ अव्यय छः प्रकार के हैं १ क्रिया विशेषण २ सम्बंध वाचक ३ उपसर्ग ४ योजक ५ विभाजक और ६ विस्मयादिबोधक ॥

१ क्रियाविशेषण ॥

३३८ क्रियाविशेषण उसे कहते हैं जिस से क्रिया का विशेष काल वा भाव वा रीति आदि का बोध होताहै यह चार प्रकार काहै १ काल वाचक २ स्थानवाचक ३ भाववाचक ४ परिमाणवाचक। इन में से जो, मुख्य और बोल चाल में बहुधा आते हैं उन्हें नीचे लिखते हैं ॥

कालवाचक ।

अब	परसों	सर्वदा
तब	तरसों	निदान
कब	नरसों	बारंबार
जब	तड़के	तुरन्त
आज	सबेरे	पश्चात
कल	प्रातः	कबहीं
फिर	सदा	सनातन

स्थानवाचक ।

यहां	उधर	आसपास
वहां	किधर	सर्वत्र
कहां	जिधर	निकट
जहां	तिधर	समीप
तहां	वार	नेरे
इधर	पार	दूर

भाव वाचक ।

अकस्मात	निकट	निस्सन्देह
अचानक	निरंतर	हां
अर्थात	यद्यपि	अवश्य
केवल	यथार्थ	तो
क्यों	वृथा	भी
ज्यों	यों	न
त्यों	परस्पर	नहीं
झटपट	शीघ्र	मत
ठीक	सचमुच	मानो
तथापि	सेंतमेंत	स्वयं

परिमाणवाचक ।

अति	कुछ	बहुतेर
अत्यन्त	बिरले	थोड़ेर

अधिक	बहुत	तनिक
अतिशय	प्रायः	इत्यादि

३३९ कई एक क्रियाविशेषण के अंत में निश्चय जनाने के लिये ही या हीं लाते हैं। जैसे अभी तभी कभी जभी योंहीं कहीं। कई एक दोहरा कर बोले जाते हैं और बहुधा अनेक क्रियाविशेषण एकसाथ आते हैं। जैसे

कभी कभी	जब तक	जहां कहीं
जहां जहां	तब तक	जब कभी
बेर बेर	कभी नहीं	कहीं नहीं
कहीं कहीं	जैसा वैसा	और कहीं
अब तक	ज्यों ज्यों	त्यों त्यों

३४० अनिश्चय जनाने को दो समान अथवा असमान क्रियाविशेषण के मध्य में न लगादेते हैं। जैसे

कभी न कभी	कहीं न कहीं	जब न तब

३४१ कितने एक क्रियाविशेषण हैं जो संज्ञा के तुल्य विभक्ति के साथ आते हैं। जैसे कि इन उदाहरणों में यहांकी भूमि अच्छीहै अब की बेर देखलूं मैं ऊपर से आता था यह आजका कामहै कि कल का॥

३४२ गुणवाचक संज्ञा भी क्रियाविशेषण हो जातीहैं जैसे इसको धीरे धीरे सरकाओ पेड़ों को सीधे लगाते जाओ यह अच्छा चलता है यह सुन्दर सीती है॥

३४३ बहुतेरे अव्यय शब्दों के साथ करके पूर्वकसे आदिके लगाने से क्रियाविशेषण हो जाते हैं। जैसे इन वाक्यों में एक राजाने विनय पूर्वक फिर कहा आलस्य से काम करता है वो राजा बुद्धि से चलता है वह सुख से राज्य करता है॥

२ सम्बन्धसूचक।

३४४ सम्बंधसूचक अव्यय उन्हें कहते हैं जिस से बोध होता है कि संज्ञा में और वाक्यके दूसरे शब्दों में क्या सम्बन्ध है। वे दो प्रकार के हैं पहिले वे जिनके पूर्व संज्ञा की विभक्ति नहीं आती। जैसे रहित

रहित समेत सुधां ली इत्यादि। दूसरे वे जिनके पूर्व संज्ञा के सम्बन्ध कारक की विभक्ति आती है। जैसे

आगे	पास	बाहिर	तुल्य
पीछे	संग	विषय	बायां
ऊपर	साथ	बदले	दहिना
नीचे	भीतर	तले	बीच

३४५ ऊपर के लिखे हुए शब्द यथार्थ में अधिकरणवाची संज्ञा हैं पर उनके अधिकरण चिन्ह के लोप करने से वे अव्यय होगये हैं। जैसे आगा शब्द अधिकरण की विभक्ति सहित तो आगे में होगया फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप किया तो हुआ आगे जैसा देवमन्दिर घर के आगे में है फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप करके तो रहा देवमन्दिर घर के आगे है। ऐसे ही सर्वत्र जानो॥

२ उपसर्ग

३४६ नीचे के लिखे हुए अव्यय शब्द संस्कृत और हिन्दी में उपसर्ग कहाते हैं। उपसर्ग संस्कृत में प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं॥

३४७ कहीं दो कहीं तीन और कहीं चार उपसर्ग भी एकत्र होते हैं। जैसे विहार व्यवहार सुव्यवहार समभिव्याहार आदि॥

३४८ उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं अर्थात जिस क्रिया से युक्त होते हैं उसी के अर्थ का प्रकाश करते हैं पर असंयुक्त होके निरर्थक रहते हैं। कहीं ऐसा होता है कि उपसर्ग के आने से पदका अर्थ बदल जाता है। जैसा दान आदान इत्यादि॥

३४९ उपसर्गों के प्रधान अर्थ वा भाव जो संयोग में उत्पन्न होते हैं नीचे लिखते हैं॥

प्र—अतिशय गति यश उत्पत्ति व्यवहार आदि का द्योतक है। जैसे प्रणाम प्रस्थान प्रसिद्ध प्रभृति प्रयोग इत्यादि॥

परा—प्रत्यावृत्ति नाश अनादर आदिका द्योतक है। जैसे पराजय पराभव परास्त इत्यादि॥

अप—हीनता वैरूप्य अंश का द्योतक है। जैसे अपयश अपमान अपवाद अपलक्षण अपशब्द इत्यादि ॥

सम्—संयोग आभिमुख्य उत्तमता आदि का द्योतक है। जैसे सम्बन्ध संमुख सन्तुष्ट संस्कृत इत्यादि.

अनु—सादृश्य पश्चात अनुक्रम आदि का द्योतक है। जैसे अनुरूप अनुगामी अनुभव अनुताप इत्यादि ।

अव—अनादर अंश का द्योतक है। जैसे अवज्ञा अवगुण अवनीत अवधारण इत्यादि ॥

निस्—निषेध का द्योतक है। जैसे निराकार निर्दोष निर्जीव निर्भय निस्सन्देह इत्यादि ।

दुर्—कष्ट दुष्टता निन्दा आदि का द्योतक है। जैसे दुर्गम दुस्त्यज दुर्जन दुर्दशा दुर्बुद्धि दुर्नाम इत्यादि

वि—भिन्नता हीनता असादृश्यता आदिका द्योतक है। जैसे वियोग विरूप विदेश विवर्ण विलक्षण इत्यादि ॥

नि—निषेध अवरोध आदि का द्योतक है। जैसे निवारण निवृत्ति निरोध इत्यादि ॥

अधि—उपरिभाव प्रधानता स्वामित्व आदिका द्योतक है। जैसे अधिराज अधिकार अधिरथ इत्यादि ॥

अति—अतिशय उत्कर्ष आदिका द्योतक है। जैसे अतिकाल अतिभाव अतिगुरु इत्यादि ॥

सु—उत्तमता श्रेष्ठता सुगमता आदि का द्योतक है। जैसे सुजाति सुपुत्र सुलभ इत्यादि ॥

कु—बुराई दुष्टता आदि का द्योतक है। जैसे कुकर्म कुपुत्र कुजाति इत्यादि ॥

उत्—उच्चता उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे उदय उदाहरण उत्पत्ति इत्यादि ॥

अभि—प्रधानता समीपता भिन्नता इच्छा आदि का द्योतक है। जैसे अभिजात अभिप्राय अभिमत अभिक्रम अभिगमन इत्यादि ॥

प्रति—प्रत्येकता सादृश्यता विरोध आदि का द्योतक है। जैसे प्रतिदिन प्रतिशब्द प्रतिवादी इत्यादि ॥

परि—सर्वतोभाव अतिशयत्याग आदि का द्योतक है। जैसे परिपूर्ण परिजन परिच्छेद परिहार इत्यादि ॥

उप—समीपता निकृष्टता आदि का द्योतक है। जैसे उपवन उपग्रह उपपत्ति इत्यादि ॥

आ—सीमा ग्रहण विरोध आदि का द्योतक है। जैसे आभोग आकार आदान आगमन आरोग्य इत्यादि ॥

अ—रहितता निषेध आदि का द्योतक है। जैसे अकाल अजय अपवित्र। स्वरादि शब्द के आगे अ के आने से अन् हो जाता है। जैसे अनादि अनन्त अनुचित अनेक इत्यादि ॥

सह वा स—संयोग सहित आदि का द्योतक है। जैसे सहकर्मी सहगमन सहचर साकार सचेत इत्यादि ॥

४ समुच्चयबोधक।

३५० जो शब्द दो पदों वा वाक्यों वा वाक्यों के अंशों के मध्य में आते हैं और प्रत्येक पद के भिन्न क्रिया सहित अन्वय का संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं। जैसे

संयोजक शब्द।		विभाजक शब्द।
औ	यथा	वा
और	यदि	अथवा
एवं	जो	क्या—क्या
अथ	भी	परंतु
कि	पुनर	पर
तो		किन्तु
		चाहे
फिर		जो

५ विस्मयादिबोधक शब्द।

३५१ विस्मयादिबोधक अव्यय उसे कहते हैं जिनसे अन्तःकरण का भाव वा दशा प्रकाशित होती है वे नाना प्रकार के हैं। जैसे पीड़ा वा क्लेश बोधक यथा आह अह अहह आहा ओहो होहो हाय हाय आह आह वा त्राहि त्राहि बाप रे दहहह मैया रे मया रे। आनन्द वा

आश्चर्यबोधक यथा वाह वाह धन्य धन्य जय जय। लज्जा वा तिरस्कार बोधक यथा छी छी धिक फिश दुर इत्यादि जानो॥

एग्यारहवां अध्याय॥

अथ वाक्यविन्यास।

३५२ वाक्यविन्यास व्याकरण के उस भाग को कहते हैं जिस में शब्दों के द्वारा वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है॥

३५३ पहिले की लिखी हुई रीतियों से जिन शब्दों को सिद्धकर आये हैं उन्हें वाक्य में किसक्रम से रखना चाहिये इसका कोईनियम बतलाया नहीं गया इसलिये उसे अब लिखतेहैं जिसे जानकर जहां जो पद रखने के योग्य है उसे वहां रखें॥

३५४ पदों के उस समूह को वाक्य कहते हैं जिसमें अन्तमेंक्रिया रहकर उसके अर्थ को पूर्ण करती है। वाक्य में प्रत्येक कारक न चाहिये परंतु कर्त्ता और क्रिया के बिना वाक्य नहीं बनता॥

३५५ जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्यकहते हैं और जो कहा जाताहै वही विधेय कहाताहै। जैसे घास उगती है घोड़ा दौड़ता है॥

३५६ उद्देश्य और विधेय दोनों को विशेषणके द्वाराहम बढ़ासकते हैं। जैसे हरी घास शीघ्र उगती है काला घोड़ा अच्छा दौड़ताहै॥

३५७ समझनाचाहियेकिजबवाक्यमें केवलकर्त्ता औरक्रियादोहीहोते हैंतबकर्त्ताउद्देश्य औरक्रिया विधेयरहतीहै। जैसेआंधीआतीहैयहां आंधी उद्देश्यहैऔरआनाक्रियाउसके ऊपरविधेयहै ऐसेही औरभीजानो॥

३५८ यदि कर्त्ता को कहकर उसका विशेषण क्रियाके पूर्वरहे तो कर्त्ता को उद्देश्य करके उसके विशेषण सहित क्रिया को उसपर विधेय जानो। जैसे नगरों में कूंए का पानी खारा होताहै। इसवाक्यमें कर्त्ता जो पानी है उसपर उसके विशेषण खारेके साथहोनाक्रियाविधेयहै॥

३५९ यदि एक क्रिया के दो कर्त्ता वा दो कर्महोवें और परस्पर एक दूसरे के विशेष्य विशेषण न होसकें तोपहिली संज्ञा को उद्देश्य और दूसरी संज्ञा सहित क्रियाको विधेय जानो। जैसे वहलड़का राजा हो गया यह मनुष्य पशु है वह पुरुष स्त्री बन गया है॥

पदयोजना का क्रम

३६० साधारण रीति यह है कि वाक्य के आदि में कर्ता और अन्त में क्रिया और यदि और कारकोंका प्रयोजन पड़े तो उन्हें कर्ता और क्रिया के बीच में लिखो। जैसे स्त्री सुई से कपड़ा सीतीहै कपोत अपनी चोंच से दानों को बीनर कर खाता है॥

३६१ जो पद कर्ता से सम्बंध रखते हैं उन्हें कर्ता के निकट रखो और क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसे क्रिया के सङ्ग लगाओ। जैसे मेरा घोड़ा देखने में अति सुन्दर है बुड्ढा माली पेड़ों से प्रति दिन फल तोड़ता है॥

३६२ यदि वाक्य में कर्ता और क्रिया को छोड़कर और भी संज्ञा वा विशेषण रहें और उनके साथ दूसरे शब्दों के लिखनेकी आवश्यकता पड़े तो जो पद जिससे सम्बंध रखता हो उसे उसके सङ्ग जोड़दो। जैसे ग्रामीण मनुष्य नागोरी बैल के समान परिश्रमी होते हैं दरिद्र मनुष्य को कँकरीली धरती ही रेशमी बिछौना है॥

३६३ गुणवाचक शब्द प्रायः अपनी संज्ञा के पूर्व और क्रियाविशेषण क्रिया के पूर्व आताहै। जैसे बड़ी लकड़ी बहुत कम मिलतीहै मोटी रस्सी बड़ा बोझ भलीभांति सम्भालती है॥

३६४ पूर्वकालिक क्रिया उस क्रियाके निकट रहती जिससे वाक्य समाप्त होता है। जैसे लड़का आंख मूंदकर सोता है ब्राह्मण पलथी बांधकर रोटी खाताहै॥

३६५ अवधारण विशेषता वा छन्दकी पूर्णता के लिये सब शब्द निज स्थानको छोड़कर वाक्य के दूसरे२ स्थानों में आते हैं। जैसे

सिया सहित रघुपति पद देखी।
करि निज जन्म सुफल मुनिलेखी॥

३६६ प्रश्नवाचक सर्वनाम को उसीस्थान पर रखना चाहिये जिसके विषय में मुख्यता पूर्वक प्रश्न रहे और यदि वाक्य ही पूरा प्रश्न हो तो उसे वाक्य के आदि में लिखना चाहिये। जैसे क्या यह वहीहै जिसे तुमने देखा था यह कौन पुस्तक है उसे किसे दोगे यह क्या करती है इत्यादि॥

२९७ जहां प्रश्नवाचक शब्द नहीं रहता उस वाक्यमें बोलनवालेकी चेष्टा वा उसके उच्चारणके स्वरभेदसे प्रश्न समझाजाताहै। जैसे वह आया है मैं जाऊं घंटा बजाहै मुझे डराते हो ये हाट बन्ध होगई॥

२९८ सकर्मक धातुकी भूतकालिक क्रिया को छोड़कर शेष क्रिया के लिङ्ग और वचन कर्ताके लिङ्ग और वचन के समान होते हैं। यह बात केवल कर्तृ प्रधान क्रियाकी है। जैसे नदी बहतीहै लड़के खेलते हैं राजा देखेगा॥

२९९ यदि सकर्मक क्रियाहो और काल भूत हो तो पूर्वोक्तरीति के अनुसार कर्ता के आगे ने आवेगा और यदि कर्म का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया के लिङ्गवचन कर्म के अनुसार होंगे नहीं तो कर्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार। जैसे लड़कों ने घोड़े देखे लड़के ने पोथीपढ़ी कुटुटी ने अण्डेदिये बकरियों ने खेत चरा पिता ने पुत्रकोपाया रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि॥

३०० यदि एकही क्रियाके अनेक कर्ता रहें और वे लिङ्ग में समान न होवें तो क्रिया में बहुवचन होगा और लिङ्ग उसके अन्तिम कर्ताके समानरहेगा। जैसे पृथ्वी चंद्रमा और सब ग्रह सूर्य के आसपास घूमते हैं घोड़े बैल और बकरियां चरती हैं॥

३०१ यदि अनेक लिङ्ग में असमान कर्ता और क्रियाके मध्य में समुदायवाचक कोईपद आपड़े तो क्रियापुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होगी। जैसे नर नारी राजा रानी सब के सब बाहर निकले हैं॥

३०२ जोवाक्यमें कईएक संज्ञारहें और उनकेसमुदायक से एकवचन समझाजाय तोक्रियामें एकवचनहोगा। जैसे धन जन स्त्री और राज्य मेरा क्यों न गया चार मास और तीन बरस इसके करने में लगा है॥

३०३ यदि वाक्यमें एकक्रिया के अनेककर्ता रहें और उनके समुदायक से बहुवचन विवक्षित होवे तो क्रियामें बहुवचन होगा। जैसे इसके मोललेने में मैंने चाररुपैये सातआने छदाम दिये हैं॥

३०४ आदरके लिये क्रियामें बहुवचन होताहै चाहे आदरवाचक शब्द कर्ता के साथ रहे चाहे न रहे। जैसे लालाजी आये हैं पण्डित जी गये हैं तुम क्या कहते हो॥

२७५ जो उद्देश्य बहुत रहे और विधेय एकहो तो अन्तिम उद्देश्य का लिंगहोगा और विधेय संज्ञा हो तो विधेय के अनुसार लिंगवचन होगा। जैसे कश्मीर के लड़के लड़कियां सुन्दर होतीहैं घास पेड़ बूटे लता सबही वनस्पति कहाती हैं॥

२७६ यदि एकही क्रिया के अनेक कर्ता हों और उनके बीच में विभाजक शब्द रहे तो क्रिया एकवचनान्त होगी। जैसे मेरा घोड़ा वा खेत आज बेचा जायगा मुझे न भूख न प्यास लगती है॥

२७७ यदि एकक्रिया के उत्तम मध्यम और अन्य पुरुष कर्ता हों तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी। जैसे हम और तुम चलेंगे तू और मैं पढ़ूंगा वे और हम तुम सुनेंगे॥

२७८ यदि किसी क्रिया के मध्यम और अन्यपुरुष कर्ता रहें तो क्रिया मध्यम पुरुषके अनुरोध से होगी। जैसे वह और तुम चलो वे और तुम पढ़ो॥

विशेष्य और विशेषण का वर्णन।

२७९ वाक्यमें जो प्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा रहतीहै उसेविशेष्य कहतेहैं और उसकेगुण बतानेवाले शब्दको विशेषण। जैसे यह यशस्वी पुरुषहै। यहां पुरुषप्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा है इसलियेकउसे विशेष्य कहते हैं और उसकेगुणका बतानेवाला यशस्वी शब्द अप्रधान अर्थात सामान्यवचाकहे इसलिये उसकोविशेषणकहतेहैं। ऐसेहीसर्वत्र जानो॥

२८० कहीं२ केवलविशेषण आजाताहै। जैसे ज्ञानियों को ऐसा करना उचित नहींहै। यहां उसके विशेष्य मनुष्यशब्द का अध्याहार होताहै ऐसेही और भी जानो॥

२८१ केवल आकारान्त गुणवाचक शब्दोंमें विशेषता होतीहै कि प्रधान कर्ता के एक वचन को छोड़कर और शेष कारकों के एकवचन [illegible] में [illegible] को ए होजाता है। जैसे ऊंचे पेड़ लम्बे मनुष्यों को सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़का सुन्दरे बन॥

[illegible] यदि आकारान्त गुणवाचक स्त्रीलिंग शब्दका विशेषण होकर आवे तो [illegible] कारकोंमें उसके आ को ए होती है। जैसे मोटी रस्सी मोटी रस्सियां मोटी रस्सी से मोटी रस्सियों से॥

३८३ जब गुणवाचक शब्द अपने विशेष्य के साथ आताहै तब उस में न तो कारक न बहुवचन के चिन्ह रहते हैं केवल विशेष्य के आगे आतेहैं । जैसे मोटियां रस्सियां मोटियों रस्सियों से ऐसा कहना अशुद्ध है । परन्तु विशेष्यवाला न आय और विशेषण ही दीख पड़े तो कारक के चिन्ह और आदेश भी बने रहते हैं । जैसे दीनों को मत सताओ भूखों को खिलाते हैं धनियों का आदर बहुत होता है निर्बलों की सहायता करो ॥

३८४ जब कर्म कारक का चिन्ह नहीं रहता तो विशेषण कर्म के अनुसार होता है । जैसे मैंने लाठी सीधी की घोड़ी निकाल के घर के साम्हने खड़ी करो । परन्तु जब कर्म कारक का चिन्ह देख पड़ता है तब विशेषण कर्त्ताके अनुसार होताहै । जैसे तुमने कांटों को क्यों टेढ़ा किया काठ के रंग को और गहरा करदो ॥

३८५ यदि अकर्मक क्रिया के भिन्न२ लिङ्गके अनेक कर्त्ताहों जिनका विशेषण भी मिले तो उसमें अंत्यकर्त्ता का लिङ्ग होगा । जैसे उस घर के पत्थर चूना और ईंट अच्छी हैं मेरा पिता माता और दोनों भाई जीते हैं सांवला लड़का और उसकी गोरी बहिनें दौड़ती आती हैं ॥

३८६ कर्तृवाचक कर्मवाचक और क्रियाद्योतक संज्ञा भी विशेषण होके आती हैं और उनमें वही नियम होते हैं जो ऊपर लिख आये हैं । जैसे लिखनेवाले रामानन्द को बुलाओ गानेवाली लड़की के साथ मरा हुआ घोड़ा खेत में पड़ाहै निकाला हुआ घोड़ा बाहर जाके हिलतीहुई डालीसे फलगिरता है । इसमें हिलतीहुई क्रियाद्योतकसंज्ञा है और वह अपने विशेष डाली की क्रिया बताती है ऐसेही सर्वत्र ॥

३८७ संख्यावाचक शब्द भी संख्यापूर्वक प्रत्यय वा अथवा वां के आने से संज्ञा का विशेषण होता है । और जो नियम आकारान्त गुणवाचक के हैं वो उसमें भी लगते हैं । जैसे तीसरी लड़की चौथे लड़के की पोथी सातवें मास का नवां दिन दसवीं स्त्री से ॥

३८८ एक विशेष्य के अनेक आकारान्त विशेषणहों तो सबमें वही लिङ्ग वचन होगा जो संज्ञा का है । जैसे बड़ी लम्बी कड़ी बड़े ऊंचे पेड़ पर स्वप्न में बड़ीऊंची डरावनी मूर्ति मेरे सन्मुख आई ॥

३७९ कह आये हैं कि उस पद के समुदायक को वाक्य कहते हैं जिसके अंत में क्रिया रहकर उसके अर्थको पूर्ण करती है। यह कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान के भेद से दो प्रकार का होता है ॥

१ कर्तृप्रधान वाक्य ।

३८० कर्त्ता अपने अपेक्षित कारक और क्रिया के साथ जब रहता है तो वह वाक्य कहाता है । उसमें जो और शब्दों की आवश्यकता हो तो ऐसे शब्द आवेंगे जिनका आपस में सम्बंध रहेगा । जैसे बढ़ई ने बढ़ोसी नाव बनाई है लेखक ने सुन्दर लेखनी से मेरे लिये पोथी लिखी है इत्यादि ॥

३८१ जो ऐसे शब्द वाक्यमें पड़ेंगे कि जिनका परस्पर कुछ सम्बंध न रहे तो उनसे कुछ अर्थ न निकलेगा इसकारण वह वाक्य अशुद्ध होगा ॥

२ कर्मप्रधान वाक्य ।

३८२ जैसे कर्तृप्रधान वाक्य में कर्त्ता अवश्य रहता है वैसेही कर्म प्रधान वाक्य में कर्म का रहना आवश्यक है क्योंकि यहां कर्मही कर्त्ता के रूप से आया करता है । इस से यह रीति है कि पहिले कर्म और अंत में क्रिया और अपेक्षित कारक और विशेषण सब बीच में अपने२ सम्बंध के अनुसार रहें । जैसे पर्वत में से सोना चांदी आदि निकाली जाती हैं बड़े बिचार से यह सुन्दर ग्रंथ भली भांति देखा गया ॥

३८३ यह भी जानना चाहिये कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया में कर्त्ता प्रधान रहता है और कर्मप्रधान क्रियामें कर्म वैसेही भावप्रधान क्रिया में भाव ही प्रधान हो जाता है ।

३८४ जहां अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान आता है और कर्त्ता भी करण कारक के चिन्ह से के साथ मिले वहां भावप्रधान जानो । जैसे उससे बिना बोले कब रहाजायगा मुझसे रात को जागा नहीं जाता इत्यादि ॥

३८५ धातु के अर्थ को भाव कहते हैं वह एक है और पुल्लिङ्ग भी है इसलिये भावप्रधान क्रिया में भी एक ही वचन होता है और वह क्रिया पुल्लिङ्ग रहती है ॥

३९६ यद्यपि कर्माक्रियाका प्रयोग हिन्दी भाषामें बहुत नहीं आता तथापि नहींके साथ इसे बहुत बोलते हैं और इससे केवलभाव अर्थात् व्यापार का बोध होता है॥

३९७ यद्यपि ऊपर के लिखेहुए नियमों के पढ़नेसे कोई ऐसी विशेष बात नहीं बच रहती जिसके निमित्त कुछ लिखना पड़े तथापि वाक्य-विन्यासमें ये तीनबातें मुख्यहैं आकांक्षा योग्यता और आसत्ति जिनके बिन जाने वाक्य बनाने में कठिनता होती है॥

३९८ १ एक पद की दूसरे पद के साथ अन्वय के लिये जो चाह रहती है उसे आकांक्षा कहते हैं। जैसे गैया घोड़ा हाथी पुरुष यह वाक्य नहीं कहाता है क्योंकि आकांक्षा नहीं है परंतु चरती दौड़ता नहाता सोता इन क्रियाओं के लगाने से वाक्य बन जाता है इसलिये कि अन्वय के लिये इनकी चाह अपेक्षित है॥

३९९ २ परस्पर अन्वित होने में अर्थ बोध के औचित्यको योग्यता कहते हैं। जैसे यदि कोई कहे कि आगसे सींचते हैं तो यहभी वाक्य न होगा क्योंकि सींचना क्रिया की योग्यता आग के साथ बोधित होती है। इस कारण जल से सींचता है यह वाक्य कहाता है॥

४०० ३ पदों के सान्निध्य को प्रत्यासत्ति कहते हैं अर्थात् जिस पद का अन्वय जिस शब्द के साथ अपेक्षितहो उनके बीचमें बहुतसे काल का व्यवधान न पड़ने पावे नहीं तो भोर के बोले हुए कर्तृपद के साथ सांझ के उच्चरित क्रिया पदका अन्वय हो जायगा। जैसे रामदास भोर चोर मार पीट लेन देन आग पानी घी चीनी इसको कहके सांझ को आओ हुआ पकड़ा होती है करते हैं ले जाओ ऐसा कहा यह वाक्य न कहावेगा॥

॥ इति वाक्यविन्यास ॥

बारहवां अध्याय ॥

अथ छन्दोनिरूपण ॥

(१) छन्दका लक्षण यह है कि जिसमें मात्रा वा वर्णकी गिनती रहती है और प्रायः उस में चार पाद होते हैं ॥

(२) वर्ण दोप्रकारके होते हैं अर्थात् गुरु और लघु एक मात्रिक को लघु द्विमात्रिक को गुरु कहते हैं॥

(३) अनुस्वार और विसर्ग करके युक्त जो लघुहै उसको गुरुकहते है और पद के अन्त में और संयोग के पूर्व में रहनेवाले को भी गुरु बोलते हैं और स्वरूप उसका वक्र लिखा जाता है जैसा कि ऽ यहचिन्ह है और लघु का स्वरूप एक सीधी पाई जैसे । यह है ॥

(४) वर्णवृत्तों में आठ गण होते हैं और प्रत्येक गण तीन२ वर्णों का मानागया है १ मगण २ नगण ३ भगण ४ यगण ५ जगण ६ रगण ७ सगण ८ तगण ॥

(५) तीन गुरु का मगण होता है और तीन लघुका नगण होता है और आदि गुरु भगण और आदिलघु यगण मध्यगुरु जगण मध्यलघु रगण और अन्तगुरु सगण और अन्तलघु तगण कहाते हैं ॥ इन में मगण नगण भगण और यगण ये चारों छन्दके आदि में शुभ हैं और शेष चारों अशुभ । जैसे

मगण	= ऽ ऽ ऽ	ये चारों शुभ हैं
नगण	= । । ।	
भगण	= ऽ । ।	
यगण	= । ऽ ।	
जगण	= । ऽ ।	ये चारों अशुभ हैं
रगण	= ऽ । ऽ	
सगण	= । । ऽ	
तगण	= ऽ ऽ ।	

(६) और मात्रावृत्त के पांच गण हैं अर्थात् ट ठ ड ढ ण इन में छः मात्रा का टगण और पांच मात्राका ठगण और चार मात्राका डगण और तीन मात्रा का ढगण और दो मात्रा का णगण होता है ॥

(७) और टगण के तेरह भेद हैं और ठ के आठ और ड के पांच और ढ के तीन और णगण के दो भेद है ॥

जैसे छः मात्रा के टगण का उदाहरण ।

इसकी यह रीति है कि गुरु हो तो ऊपर नीचे दोनों ओर अंक देता जाय और लघु के ऊपर ही लिखे जिसका क्रम यह है कि पहिले एक लिखे फिर दो फिर एक और दो को मिलाके तीन लिखे फिर दो और तीन मिला के पांच लिखे फिर तीन और पांच मिला के आठ लिखे फिर पांच और आठ मिलाके १३ लिखे इसीप्रकार पूर्व पूर्व का अंक जोड़ता जाय अंत में जो अंक आवें उतने ही जाने जैसे १ २ ८ १ २ ३ ५ ८ १३

ऽ ऽ ऽ । । । । । ।

(८) प्रस्तार बनाने की यह रीति है कि प-हिले सब गुरु रखना फिर पहिले गुरु के नीचे लघु लिखना और आगे जैसा ऊपर हो वैसा ही लिखता जाय जो मात्रा बचे उसे पीछे गुरु लिखकर लघु लिखे यदि एक ही मात्रा बचे तो लघु ही लिखे दो बचे तो १ गुरु लिखे तीन बचे तो गुरु लिख के लघु लिखे चार बचे तो दो गुरु लिखे पांच बचे दो गुरु लिखके लघु लिखे इत्यादि । फिर उसके नीचे जो पहिला गुरु हो तो उसके नीचे लघु लिखे आगे ऊपर के समान जो बचे सो पूर्वोक्त रीति से लिखे इसी प्रकार जब तक सब लघु न हो जायँ तब तक बराबर लिखता चला जाये । जैसे कि पृष्ठकी दाहिनी ओर [illegible] लिखा हुआ है ॥

२ ५ १३
ऽ ऽ ऽ
। । ऽ ऽ
। ऽ । ऽ
। । । । ऽ
। ऽ ऽ ।
ऽ । ऽ ।
ऽ ऽ । ।
। । ऽ । ।
। ऽ । । ।
ऽ । । । ।
। । । । । ।

(९) छन्दोंका मूल यहहै कि वर्णवृत्तमें एक वर्णसे लेकर छब्बीस वर्णों लों के एक २ चरण होतेहैं उनके प्रस्तार निकालने की यह रीति है कि एकचरणमें जितने अक्षर हों उन्हें लिखकर उनके ऊपर क्रमसे द्विगुणोत्तर अंक लिखता जाय फिर अन्त्यमवर्णकेऊपर जो संख्या आवे उसका द्विगुण प्रस्तार का प्रमाण बतावे। जैसे मध्या का प्रस्तार वा भेद जानना है तो ऽ ऽ ऽ ऐसा लिखकर द्विगुणोत्तर अंक दिया

१ २ ४
ऽ ऽ ऽ

अन्त में ४ आया उसका दूना किया तो हुए ८ इसेही मध्याका प्रस्तार जानो॥

नष्ट अर्थात् प्रस्तार में चौथा भेद जानना होवे
उसके निकालने की रीति ॥

(१०) प्रत्येक वर्णके प्रस्तार में प्रश्नकर्त्ता के प्रत्येक प्रश्न विषयिक रूप जाननेकी यह रीति है कि जो प्रश्न का अंक सम हो तो पहले लघु लिखे और जो विषमहो तो गुरुलिखे फिर उसका आधाकरे विषम हो तो उसमें जोड़दे फिर आधाकरे और सम हो तो योंही आधाकरे और आधा कियेपर जब समरहे तब लघु लिखदे और विषम रहे तो गुरु ऐसेही बराबर आधा करता जाय और जब २ विषम आवे तब २ उसमें एक जोड़कर आधा कियाकरे और जब तक वर्ण संख्या पूरी न हो तब तक लिखा करे। जैसे किसी ने पूछा कि आठ वर्णों के प्रस्तार में ८६ वां रूप कैसाहोता है तो८६ सम है इसलिये पहिले १ लघुलिखा फिर आधा किया तो हुए ४३ सो विषम है इस कारण १ गुरुलिखा और विषम है इसहेतु एक जोड़दिया तो हुए ४४ आधा किया २२ हुए सो सम है इससे फिर एकलघु लिखा और आधाकिया हुए ११ यह विषम है इस निमित्त एक गुरु लिखकर एक उसमें जोड़ दिया तो हुए १२ आधा किया ६ हुये सो सम है इसहेतु एक लघु लिखा आधाकिया ३ हुये सो विषम है इससे एक लिखा और एक जोड़दिया ४ हुए आधा किया २ रहे सम है एक लघु लिखलिया आधा किया १ रहा सो विषम है गुरु लिखा तो ऐसा रूप हुआ। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ यदि प्रश्नकर्त्ता की वर्ण संख्याकी पूर्णता न होवे और अंत में आकर एकही रहजाय तो उसमें एक जोड़दे और आधा करे फिर उसमें १ जोड़ता जाय जब

प्रश्नकर्त्ता के कहे हुये अंक तक पहुंचे तब बस करे । जैसे आठवर्णके प्रस्तार में तीसरा रूप कौन है तो ३ बिषम है इससे एक गुरुलेलिया एक और जोड़ा ४ हुए आधा किया २ हुए सो समहै एक लघु लिखा आधा किया १ रहा सो बिषम एक गुरु लिखा और एक जोड़दिया तो २ हुए आधा किया १ रहा बिषम है एक गुरु लिखा एक जोड़ा२ हुए आधाकिया १ रहा सो विषम है इस हेतु एकगुरु लिखा एक जोड़ा इसी प्रकार जब तक आठवर्ण पुरे न हुए तबतक लिखलेगये तो ऐसा रूप हुआ । जैसे ऽ।ऽऽऽऽऽऽ

उद्दिष्ट अर्थात् जब कोई रूप लिखकर पूछे कि यह कौथा रूप है तो उसके बताने की रीति ॥

(११) जब कोई पूछे कि अमुक रूप कौथा है तो उसके ऊपर द्विगुण अंक लिखदे और लघु के ऊपर के अंक में एक मिला दे फिर जितना हो उतेही उसका रूप जाने । जैसे किसी ने पूछा कि

यह १ २ ४ ८ १६ ३२ / ऽ । ऽ । ऽ ऽ कौथा रूप है तो लघु के ऊपर दो अंक हैं अर्थात २ और आठ इनका योग किया तो हुए १० इसमें एक मिलाया तो हुए ११ इससे जाना कि छ वर्ण के प्रस्तार में यह ग्यारहवां रूपहुआ इसे क्रिया करके उद्दिष्टको विधि से मिलाया चाहे तो ग्यारहविषम है इससे गुरु लिखकर उसमें एक चोड़ दिया १२ हुए आधा किया ६ रहे तब लघु लिखा आधा किया तो ३ रहे बिषम है गुरु लिखा १ मिलाया४ हुए आधा किया २ रहे सम है लघु लिखा फिर आधा किया १ रहा बिषम है गुरु लिखा एक जोड़ा २ हुए आधा किया सम है लघु लिखा इसी प्रकार छ वर्ण तक करते गये तोभी वही रूप निकला । जैसे ऽ। ऽ।ऽऽ॥

अब उन वृत्तों के प्रस्तार का नियम लिखा जाता है जो मात्रा से बनते हैं ॥

(१२) प्रश्नकर्त्ता जितनी मात्रा का प्रश्न करे उतनी मात्रा लिखले और उनके ऊपर पूर्वसे युग्मांक लिखता जाय फिर जौथा रूप पूछागया हो उस संख्या को अंत के अंक में घटा दे जो शेषरहे उसमें यदि पूर्व

अंक घटसकता हो तो उसे घटा दे फिर उस अंक की अगली और पिछली कलाओं को मिलाकर नीचे गुरु लिख दे और फिर जब निश्शेष न हो और कुछ शेष बचता जाय तो ऐसेही जो पूर्वका अंक हो और वह घट सके तो घटा दे और उसके आगे पीछे की कलाओं को मिला दे और उसके नीचे गुरु लिख दे इसी प्रकार जबतक निश्शेष न होय तब तक लिखता और ऐसा करता चला जाय तो अभीप्सित प्रस्तार निकल आवेगा। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। । । ऽ ।

यहां अन्तिम संख्या १३ है इसमें ८ घटाया तो बचे ५ में पूर्व का अंक ५ घटा दिया तो निश्शेष होगया तो ऐसा रूप हुआ जैसे । । । ऽ । यदि किसी ने छठा रूप पूछा तो अन्तिम संख्या १३ में गये छ रहे ७ इस में पूर्व अंकों में ५ घट सकता है इस से उसे घटा दिया रहे २ इसमें पूर्व अंक जो २ उसे घटाया तो निश्शेष होगया अब इसका रूप ऐसा हुआ। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। ऽ ऽ ।

इसे इकट्ठा करलिया तो ऐसा । ऽ ऽ । हुआ ऐसे ही और भी जानो छ मात्रा के प्रस्तार के आठवें रूप का यह चित्र है। और छठे रूपका चित्र यहहै।

१	२	३	५	८	१३	रूप
।	।	।	।	।	।	
१	२	३	५	८	१३	मेल
।	।	।	।	।	।	
।	।	।	ऽ	।	।	फल

१	२	३	५	८	१३	रूप
।	।	।	।	।	।	
।	।	।	।	।	।	मेल
।	ऽ	ऽ	।			फल

अब एक वर्ण से लेकर पचास वर्ण पर्यन्त जिनके एक चरणहोते हैं उनके प्रस्तार के निकालने की रीति यहहै।

(१३) जिस वृत्त में जितने वर्ण एक चरण में रहैं उन्हें दूना करे लघु और गुरुको पलट देवे अर्थात उत्तरोत्तर दो से गुणा कर अंकों को दुगुणा करता चला जाय इस रीति से जितनी मात्रा लघुहोंगी उसकी आधी गुरु और गुरु की दुगुनी लघुमात्रा होवेंगी ऐसे जितने जिसके प्रस्तार हैं वे सब प्रत्यक्ष हो जावेंगे । जैसे आगे के चक्रमें लिखाहै ॥

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
०		१९	५२४२८८
	१	२०	१०४८५७६
१	२	२१	२०९७१५२
२	[illegible]	२२	४१९४३०४
३	८	२३	८३८८६०८
४	१६	२४	१६७७७२१६
५	३२	२५	३३५५४४३२
६	६४	२६	६७१०८८६४
७	१२८	२७	१३४२१७७२८
८	२५६	२८	२६८४३५४५६
९	५१२	२९	५३६८७०९१२
१०	१०२४	३०	१०७३७४१८२४
११	२०४८	३१	२१४७४८३६४८
१२	४०९६	३२	४२९४९६७२९६
१३	८१९२	३३	८५८९९३४५९[illegible]
१४	१६३८४	३४	१७१७९८६९१८[illegible]
१५	३२७६८	३५	३४३५९[illegible]
१६	६५५३६	३६	६८७१९४७६७३६
१७	१३१०७२	३७	१३७४३८[illegible]
१८	२६२१४४	३८	२७४८७७९०६९४४

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
३९	५४९७५५८१३८८८	४५	३५१८४३७२०८८८३२
४०	१०९९५११६२७७७६	४६	७०३६८७४४१७७६६४
४१	२१९९०२३२५५५५२	४७	१४०७३७४८८३५५३२८
४२	४३९८०४६५१११०४	४८	२८१४७४९७६७१०६५६
४३	८७९६०९३०२२२०८	४९	५६२९४९९५३४२१३१२
४४	१७५९२१८६०४४४१६	५०	११२५८९९९०६८४२६२४

ऐसे ही और भी जानो॥

अब उनके प्रस्तार के स्वरूप निकालने की रीति लिखते हैं॥

(१३) जो जिसका रूप है उस में पहिले गुरु के स्थान में लघु लिखदे फिर ज्योंका त्यों बना रहनेदे इसी प्रकार जहां लों सब लघु न हो जाय तब तक लिखता चला जाय। जैसा आगे के चक्रमें कुछ उदाहरण के लिये लिखा है॥

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
१	उक्ता	२	ऽ १ । २
२	अत्युक्ता	४	ऽ ऽ १ । ऽ २ ऽ । ३ । । ४
३	मध्या	८	ऽ ऽ ऽ १ । ऽ ऽ २ ऽ । ऽ ३ । । ऽ ४ ऽ ऽ । ५ । ऽ । ६ ऽ । । ७ । । । ८

वर्ण	छन्द	भेद	रूप	
४	प्रतिष्ठा	१६	ऽ ऽ ऽ ऽ	१
			। ऽ ऽ ऽ	२
			ऽ । ऽ ऽ	३
			। । ऽ ऽ	४
			ऽ ऽ । ऽ	५
			। ऽ । ऽ	६
			ऽ । । ऽ	७
			। । । ऽ	८
			ऽ ऽ ऽ ।	९
			। ऽ ऽ ।	१०
			ऽ । ऽ ।	११
			। । ऽ ।	१२
			ऽ ऽ । ।	१३
			। ऽ । ।	१४
			ऽ । । ।	१५
			। । । ।	१६
५	सुप्रतिष्ठा	३२	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	१
			। ऽ ऽ ऽ ऽ	२
			ऽ । ऽ ऽ ऽ	३
			। । ऽ ऽ ऽ	४
			ऽ ऽ । ऽ ऽ	५
			। ऽ । ऽ ऽ	६
			ऽ । । ऽ ऽ	७
			। । । ऽ ऽ	८
			ऽ ऽ ऽ । ऽ	९
			। ऽ ऽ । ऽ	१०

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
५	सुप्रतिष्ठा		ऽ । ऽ । १९
			। । ऽ । १२
			ऽ ऽ । । १३
			। ऽ । । १४
			ऽ । । । १५
			। । । । १६
			ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ १७
			। ऽ ऽ ऽ । १८
			ऽ । ऽ ऽ । १९
			। । ऽ ऽ । २०
			ऽ ऽ । ऽ । २१
			। ऽ । ऽ । २२
			ऽ । । ऽ । २३
			। । । ऽ । २४
			ऽ ऽ ऽ । । २५
			। ऽ ऽ । । २६
			ऽ । ऽ । । २७
			। । ऽ । । २८
			ऽ ऽ । । । २९
			। ऽ । । । ३०
			ऽ । । । । ३१
			। । । । । ३२

ऐसे ही एकवर्ण से लेकर पचास वर्णतक जैसे ऊपर लिख आये हैं उन सब के रूप इसी प्रकार क्रिया के करने से प्रत्यक्ष हो जाते हैं। यहां विस्तार के भय से और व्याकरण के ग्रंथ में उपयोगी न समझ कर उन्हें छोड़ दिया है॥

वर्ण वृत्तों में जे भेद होते हैं उनके जानने की रीति ॥

१ समवृत्त ।

(१४) जिसके चारों चरण तुल्य होते हैं उसे समवृत्त कहते हैं ॥

२ अर्धसमवृत्त ।

(१५) जिसके दो चरण सम हों और शेष दो पाद विषम रहें तो उसे अर्धसमवृत्त कहते हैं ॥

(३) विषमवृत्त ।

(१६) विषमवृत्त का लक्षण यह है कि जिस वृत्त के चारों पाद आपस में तुल्य न होवें। आगे क्रम से इन सब के उदाहरण लिखते हैं ॥

१ समवृत्त का उदाहरण ।

बोलो कृष्ण मुकुन्द मुरारे त्रिभुवन विदित काम सब सारे ।
जरासंध कंसहि प्रभु मारा त्रिभुवन विदित काम सब सारा ॥

२ अर्धसमवृत्त का उदाहरण ।

राम राम कहि राम कहि बालि कीन्ह तन त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जान्यो नाग ॥

३ विषमवृत्त का उदाहरण ॥

राम राम भजु राम कंचन सम तनु धरि जगत ॥
जप तप सम दम व्रतनियम निकाम। करिकरि हरिपद पद्मधरि उतरि जयेगा हो ॥

कुछ वृत्त अब दृष्टान्तके निमित्त आगे लक्षण और उदाहरणके साथ लिखते हैं। विद्यार्थियोंको उचित है कि इन्हें सीखें तो प्रायःछन्दों की रचना में नियमानुसार अशुद्धता न रहेगी और निपुणता प्राप्त होगी ॥

इस प्रकरण में इतनी बातों का जानना अत्यन्त आवश्यक है ॥

१	छन्दोलक्षण	४	उद्दिष्ट
२	उदाहरण	५	प्रस्तार
३	नष्ट	६	[illegible]

७	समवृत्तलक्षण	११	विषमवृत्तलक्षण
८	समवृत्त का उदाहरण	१२	विषमवृत्त का उदाहरण
९	अर्धसमवृत्तलक्षण	१३	गणागणविचार
१०	अर्धसमवृत्त का उदाहरण		

जो छन्द जितनी मात्रा का होता है और उसमें ग्रन्थ के अनुसार आदि अन्त वा मध्य में जितने गुरु वा लघु लिखने की विधि है उसी क्रम से अब हम पहिले कुछ मात्रावृत्त लिखते हैं ऊपर उनका लक्षण और नीचे उदाहरण मिलेगा ॥

पहिले बड़े बड़े छन्दों को लिखते हैं फिर पीछे से छोटे छोटे भी लिखे जायेंगे ॥

३१ मात्रा का सवैया छन्द ।

(१) ३१ मात्रा का सवैया छन्द होता है उसमें आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं । जैसे

खरच खरच तो लाभ अधिक जहं बिन हर हानि न लादपलान।
सेतिहि लये देवैया राजी औरहि दये न अपनो जान ॥
ऐसो राम नाम को सौदा तेहि न भावत मूढ़ अजान।
निसि दिन मोह बस दौर नफर काल सवैया जनम सिरान॥

सोलह मात्रा का छन्द ।

(२) चतुष्पदाछन्द उसे कहते हैं जिसमें १६ मात्रा हों और उसके आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं । उदाहरण ॥

जामवंत के वचन सुहाये सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये॥
तबलग परिखेहु तुम मोहिं भाई सहि दुख कंदमूल फल खाई ॥

अड़तालिस मात्रा का सोरठा छन्द ।

(३) इसके पहिले और तीसरे में ग्यारह और चौथे दूसरे में तेरह ॥ ॥ उ० ॥ जैसे

मुक्तिजन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर ।
जहं बस संभु भवानि सो काशी सेइय कसन ॥

दोहा छन्द उसी सोरठा के उलटने से दोहा बन जाता है ॥ उ० ॥

अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुक झुक परत जेहि चितवत इक बार॥

१४४ मात्रा का कुण्डलिया छन्द।

(४) इसी दोहे के चौथे चरण को पुनरुक्त करके चौव मात्रा बढ़ा देते हैं॥ उ० ॥

टूटे नख रद केहरी वह बल गयो थकाय।
आह जरा अब आइके यह दुख दयो बढ़ाय॥
यह दुख दयो बढ़ाय चहूं दिशि जंबुक गाजैं।
शशक लोमरी आदि स्वतन्त्र करैं सब राजैं॥
बरनैं दीनदयाल हरिन बिहरैं सुख लूटे।
पंगु भये मृगराज आज नख रद के टूटे॥

अब मात्रा सम्बन्धी छोटे छोटे छन्द लिखे जाते हैं॥

पांच मात्रा का छन्द।

(५) आदि की एक मात्रा लघु हो और अन्त की दो मात्रा गुरु हों तो उसे सखिछन्द कहते हैं ॥उ०॥ महोमैं। सहीमैं। जसीसे। ससीसे।

प्रिया छन्द उसे कहते हैं जिसके आदि अन्त में गुरु और मध्य में लघु हो॥ उ० ॥ हे सखी। पत्थरी। तो हिया। री प्रिया॥

तरनिजा छन्द।

(६) जिसमें आदि की तीन मात्रा लघु और सब गुरु हों॥
उ० उर धसो। पुरुष सो। बरनिजा। तरनिजा॥

पंचाल।

(७) जिसके आदि में दो गुरु और अन्त में एक लघु हो॥
उ० नाचन्त। गावन्त। देताल। बेताल॥

वीर छन्द।

(८) जिसकेआदि और अन्तको मात्रा ह्रस्व हो औ मध्यकी दीर्घहो॥
उ० हरु पीर। भरु धीर। बरबीर। रघुबीर॥

छ मात्रा का छन्द।

(९) जिसमें सब गुरु हों॥ उ० ॥ नच्चेहै। संभूपे। बेताली। देताली॥

राम छन्द ।

(१०) जिसके आदि के दो ह्रस्व हों और अन्त के दो गुरु हों ।
जग माहीं । सुख नाहीं । तजि कामै । भजि रामै ॥

नगस्निका छन्द ।

(११) जिसमें एक गुरु और एक लघु होवे ॥
प्रसिद्ध हो । अर्थस्निका । नगिद्ध हो । नगस्निका ॥

कउा छन्द ।

(१२) इसे कहतेहैं जिसके अन्तमें गुरु और मध्यमें लघुहोवे
धीर गहो । आशु लहो । नन्दलला । कामकला ॥

अब वे वृत्त लिखेजाते हैं जिनकी गिनती वर्ण से होती है ॥

(१) अब उन वर्णवृत्त का नाम कहतेहैं जिनमें चारोंपाद तुल्य होते हैं ॥

(२) एक गुरु का श्रीछन्द होता है ॥ उ० ॥ वागदेवी है ॥

(३) दो गुरु का कामा ॥ उ० ॥ रामाकृष्णा ॥

(४) एक गुरु और एक लघु का महीछन्दहोताहै ॥ उ० ॥ हरे हरे ॥

(५) दो लघु का मधु छन्द होता है ॥ उ० ॥ हरि हरि॥

(६) आदि गुरु और अन्त लघु का सार छन्द होता है ॥
उ० रामकृष्ण ॥

(७) एक मगण का ताली छन्द होताहै ॥ उ०॥ कन्हाई सो भाई ॥

(८) एक रगण का मृगी छन्द होताहै ॥ उ० ॥ प्रेम सों पां गिरौ ॥

(९) एक यगण का शशी छन्द होता है ॥ उ० ॥ भवानी सुहानी ॥

(१०) एक सगण का रमण छन्द होताहै ॥ उ० ॥ विधुकी रजनी ॥

(११) एक तगणका पंचालछन्द होताहै ॥ उ० ॥ या सर्व संसार ॥

(१२) एक नगण का कमल छन्द होता है ॥ उ० ॥ कमल कुमुद ॥

(१३) एक मगण और एक गुरु का तीर्णा छन्द होताहै ॥
उ० जै गोविन्दा जै गोविन्दा ॥

(१४) एक तगण और एक लघु का धारी छन्द होता है ॥
उ० नन्दलाल कसकाल ॥

(१५) एक जगण और एक गुरु का नगानिका छन्द होता है ॥
उ० करो चित्त न चंचले ॥
(१६) एक नगण और एक गुरुका सती छन्द होता है ॥
उ० छन तजे सुख लहै ॥
(१७) एक मगण और दो गुरु का सम्मोहा छन्द होताहै ॥
उ० श्रीराधा माधो आराधो साधो ॥
(१८) एक तगण और दो गुरुका हारित छन्द होता है ॥
उ० गौरी भवानी जै जै मृडानी ॥
(१९) एक भगण और दो गुरु का हंसी छन्द होताहै ॥
उ० मोहन माधो गावहु साधो ॥
(२०) एक नगण और दो लघु का जमक छन्द होताहै ॥
उ० भरण जग धरण नग ॥
(२१) दो मगण का शेषराज छन्द होताहै ॥
उ० गोविन्दा गोपाला केशी कंसा काला ॥
(२२) दो सगण का डिल्ल छन्द होताहै ॥
उ० प्रभु सो कहिये दुख सों हरिये ॥
(२३) दो जगण का मालती छन्द होता है ॥
उ० गुविन्द गोपाल कृपाल दयाल ॥
(२४) एक तगण और एक यगण का तनुमध्या छन्द होता है ॥
उ० मो हिय कलेशा टारो करि बेशा ॥
(२५) एक नगण और एक यगण का शशिवदना छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो सुभग सुवेशो ॥
(२६) एक तगण और एक सगण का वसुमती छन्द होता है ॥
उ० गोपाल कहिये आनन्द लहिये ॥
(२७) दो रगण का विमोहा छन्द होता है ॥
उ० देवकीनन्दनं भक्त भौ भंजनं ॥
(२८) एक रगण और एक यगण और एक गुरु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥
उ० राम राम गाइये रामलोक पाइये ॥

(२९) एक नगण और एक जगण का वास छन्द होता है ॥

उ० भजु मनमोहन परम सु सोहन ॥

(३०) एक नगण और एक सगण और एक लघुका करहंच छन्द होताहै ॥

उ० हरिचरण सेऊ सुख परम लेऊ ॥

(३१) दो भगण और एक गुरु का पोषिरूप छन्द होता है ॥

उ० जे जे कृष्ण गोपाला, राधामाधो श्री पाला ॥

(३२) एक मगण और एक सगण और एक गुरुका मदलेखा छन्द होता है ॥

उ० गोविन्द कहि माधो केशोजी हरि साधो ॥

(३३) दो नगण और एक गुरु का मधुमती छन्द होता है ॥

उ० भजु हरि चरना असरन सरना ॥

(३४) एक भगण और एक मगण और दो गुरु का विद्युन्माली छन्द होता है ॥

उ० जे जे जे श्री राधा कृष्णा केशो कंसाराती विष्णा ॥

(३५) एक जगण और एक रगण और एक लघु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥

उ० भजो भजो गोपाल को कृपाल नन्दलाल को ॥

(३६) एक रगण और जगण और एक गुरु और लघुका मल्लिका छन्द होता है ॥

उ० राम कृष्ण राम कृष्ण वासुदेव विष्ण विष्ण ॥

(३७) दो नगण और दो गुरु का तुंगा छन्द होता है ॥

उ० गगन जलद छाये मदन जग सुहाये ॥

(३८) एक नगण और सगण और एक लघु और एकगुरुका कमल छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि कहो कहो सब सुख लहो लहो ॥

(३९) एक जगण और एक सगण और एक लघु और एक गुरु कुमारललिता छन्द होता है ॥

उ० भजो जु सुखकन्द को हरो जु दुखदन्द को ॥

(४०) दो भगण ओर दो गुरु का धिवयहा छन्द होता है ॥
उ० दीनदयाल जु देवा मैं न करी प्रभु सेवा ॥
(४१) तीन रगण का महालक्ष्मी छन्द होता है ॥
उ० राधिका वल्लभं भजेहै ले छिनी इन्द्रसे पाइले ॥
(४२) एक नगण ओर एक यगण ओर एक सगणका सारंगिकछन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो कहिये सब सुख साथै लहिये ॥
(४३) एक मगण ओर एक भगण ओर एक सगण का पाइंताछन्द होता है ॥
उ० आये आली जलद समो केकी कूजे चित्य भरमो ॥
(४४) दो नगण ओर एक सगण का कमला छन्द होता है ॥
उ० कमल सरस नयनी शशि मुखि पिक बयनी ॥
(४५) एक नगण ओर एक सगण ओर एक यगण का बिम्ब छन्द होता है ॥
उ० तुलसि बन केलिकारी सकल जन चित्तहारी ॥
(४६) एक सगण दो जगण का तोमर छन्द होताहै
उ० नवनील नीरदश्याम शुकदेव शोभान नाम ॥
(४७) तीन मगण का रूपमाली छन्द होताहै ॥
उ० अंगा वंग कालिंगा काशी गंगा सिन्धू संगामा भासी ॥
(४८) एकसगण ओर दो जगण ओर एक गुरुका संयुतछन्दहोताहै ॥
उ० हरि कृष्ण केशव वामना वसुदेव माधव पावना ॥
(४९) एक भगण ओर एक मगण ओर सगण ओर गुरु का चंपकमाला छन्द होता है ॥
उ० कंसनिकन्दा केशव कृष्णा वामन माधो मोहन विष्णा ॥
(५०) तीन भगण ओर एक गुरु का सारवती छन्द होता है ॥
उ० राम रमापति कृष्ण हरी दीनन के दुखिपति हरी ॥
(५१) एक तगण ओर एक यगण ओर एक भगण ओर एकगुरुका सुखमा छन्द होताहै ॥
उ० राधा रमना बाधा हरना माधो शरना माधो चरना ॥

(५२) एक नगण और जगण चार एक नगण और एक गुरु का अमृतगति छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि केशव कहिये सुरसरि तीर चुरहिये ॥

(५३) एक रगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का सुपथ छन्द होता है ॥

उ० वासुदेव वसुदेव सहायी श्री निवास हरि जय यदुरायी ॥

(५४) तीन भगण और दो लघु का नीलस्वरूप छन्द होता है ॥

उ० गोविन्द गोकुल गोप सहायी माधोमोहन श्रीयदुरायी ॥

(५५) एक नगण और दो जगण और एक लघु और एक गुरु का सुमुखी छन्द होता है ॥

उ० हरिहरि केशव कृष्ण कहो निसदिन संगति माधुगहो ॥

(५६) तीन नगण और एक लघु और एक गुरु का दमनक छन्द होता है ॥

उ० अमल कमल दल नयनं जलनिधि जलकृत शयनं ॥

(५७) एक रगण और एक जगण और एक रगण और एक लघु और एक गुरु का श्येनिका छन्द होता है ॥

उ० कृष्ण कृष्ण केशिकंस कन्दना देहुसुक्ख नन्दनन्दना ॥

(५) तीन मगण और दो गुरु का मालती छन्द होता है ॥

उ० रामा कृष्णा गाइये कन्ना केसो कहिये श्रीअनन्ता ॥

(५९) दो तगण और एक जगण और दो गुरु का इन्द्रवज्राछन्द होता है ॥

गोविन्दगोपाल कृपालकृष्णा माधोमुरारी व्रजनाथविष्णो ।

एक जगण और एक तगण और एक जगण और दो गुरु का उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है ॥

उ० गुपाल गोविन्द मुरारी माधो रमेश नारायण साधकारी ॥

(६१) एक जगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का उपजाति छन्द होता है ॥

राम राम रघुनन्दन देवा वीरभद्र मम मानहु सेवा ॥

चार यगण का भुजङ्गप्रयात छन्द होता है ॥

उ० धरचन्द्माधमहाआातलव चढ़ाथविलंकायहयमामशाले ॥

(६३) चार सगण का तोटक छन्द होता है ॥

उ० शिवशंकर शम्भुत्रिशूलधरं शितिकंठ गिरीशकलान्दकरं ॥

(६४) चार रगण का लक्ष्मीधर छन्द होता है ॥

उ० श्रीधरे माधवे रामचन्द्रम्भजो छोड़ को मोह को क्रोध को छु तजो ॥

(६५) सारंगछन्द उसे कहते हैं जिसमें चार भगण हो रहते हैं ॥

उ० गोपालगोविन्दश्रीकृष्णकंसारी केशोकृपासिन्धुभोपापसंहारी ॥

(६६) जिसमें चार जगण रहते हैं उसे मौक्तिकदाम छन्द को कहते हैं ॥

उ० गुपालगोविन्द हरेनन्दनन्दन दयालकृपाल सदासुखकन्दन ॥

(६७) तोटक छन्द का लक्षण यह है जिसमें चार भगण होवें ॥

उ० केशो कृष्ण कृपाल कर । मूरति मैन मुकुन्द मनोहर ॥

(६८) तरलनयनी छन्द में चार नगण होते हैं ॥

उ० कलुष हरन हरि अघ हर कमल नयन कर गिरिधर ॥

(६९ सुन्दरी उसे कहते हैं जिस में एक नगण दो भगण एक रगण हो ॥

उ० मदन मोहन माधव कृष्णजू गरुड़ वाहन वामन विष्णु जू ॥

(७०) एकसगण एकजगण और दे १सगणकाप्रमिताक्षराछन्दहोताहै ॥

उ० ब्रजराज कृष्ण कर पद्म धरं यदुनाथ रामपद देववरं ॥

यद्यपि यहां सबछन्द नहीं लिखे गये हैं तो भी इतने लिखेहैं कि प्रायः प्रयोजन न पड़ेगा और व्याकरणके ग्रंथमें सब छन्दोंका लिखना उचित भी नहीं है इसकारण साधारण से कुछ लिखकर बहुतसे छोड़ दिये हैं ॥

गति अर्थात जिनमें राग रहता है जैसे सूरसागर के भजन आदि होते हैं उनकी रचना भी इसी प्रकार हुआ करती है ॥

॥ इतिछन्दोनिरूपण ॥

सूचीपत्र ॥

अ

अंतस्थवर्ण २१, ५१.

अकर्मकक्रिया १८९,१६०,३८५.

अकर्मकक्रियाके रूप २१६—२२४.

अक्षर १०, ११, १३.

अधिकरणकारक११४—७,३१६—
३१९,३४५.

अनिश्चयवाचकसर्वनाम१५९,१६८.

अनुस्वार १५,१६.

अन्यपुरुष १५५,१५९,१६०.

अपत्यवाचक संज्ञा ३२२.

अपादानकारक११४—५,३०५—३०८.

अपूर्णभूतकाल १६८—५,२०७.

अभिव्यापक आधार ३१०.

अल्पप्राण वर्ण २२,५१.

अवकाशबोधक क्रिया २६३.

अवधारणबोधक क्रिया २५४.

अव्यय ८६,३३६—३५१.

अव्ययीभाव समास ३३५.

आकांक्षा ३६७,३६८.

आकारान्तक्रिया २१२,२१३.

आकारान्त गुणवाचक १४६,१५०,
३८१, ३८८.

आदरसूचक सर्वनाम १००.

आधार ३१६,३१७.

आना क्रिया २४६.

आप सर्वनाम १००—१०५.

आपस में १०५.

आरम्भबोधक क्रिया २६२.

आसत्ति ३६७,४००.

आसन्नभूतकाल १६७,२०६.

इ

इच्छाबोधक क्रिया २५६,२६०.

इतना १८३.

उ

उच्चारण ३७—४६.

उतना १८३.

उत्तमपुरुष १५५—१५७.

उद्देश्य ३५२,३५६,३७५.

उपसर्ग ३४६—३४९.

ऊ

ऊनवाचक संज्ञा ३२५.

ऐ

ऐसा १८३.

औ

औपश्लेषिक आधार ३१०.

क

करके ३४३.

कर्ता कारक ११४—३.

करणवाचकसंज्ञा २८६,२७७,२७८.

क

करना क्रिया २३६—२३८.

कर्त्ताकारक११४—१,२८१—२८६,३३९.

कर्तृप्रधानक्रिया१६१,३१९,३२०,३२१.

कर्तृवाचकसंज्ञा २६०,२६९,३१३,३८९.

कर्मकारक११४—२,२८७—२९१,३८४.

कर्मधारय समास ३३०.

कर्मप्रधान क्रिया १६१,२३२,३३२.

कर्मवाचक संज्ञा २६६,२७०,३८६.

कारक ११३,११४,२८०-३१६.

कारककी विभक्तियां ११५.

कारण २६३,२६४.

कालबोधक अव्यय ३३८.

कितना १८३.

कुछ शब्द १६६.

कृदन्त २६५—२७६.

कैसा १८३.

कोई १६८,१६९.

कौन १७९—१७८.

क्या १७०,१७८.

क्रिया का साधारण रूप १८०.

क्रियाकेविषयमें८५,१८५—२५४,३५४.

क्रियार्थक संज्ञा १८७.

क्रियावाचक संज्ञा २६५.

क्रियाविशेषण ३३८—३४३.

क्रियाद्योतकसंज्ञा २६६,२७६,३८६.

ग

गुणवाचक ६४,१४९—१५२,३२०,
३४२,३७६—३८६

च

चाहना २५९,२९०.

ज

जातिवाचक संज्ञा ६२.

जाना क्रिया २३२,२३६,२४६,२५९

जितना १८३.

जैसा १८३.

जो सर्वनाम १७६,१८०.

त

तत्पुरुषसमास ३३१

तद्धित ३२८—३२९.

तितना १८३.

तैसा १८३

द

देखना क्रियाके रूप २२९—२३१.

देना क्रिया २३६,२६९.

द्वन्द्व समास ३३४.

द्वारा २६३,२६४.

द्विगु समास ३३३

ध

धातु १८६,१८८,२०१.

न

नित्यताबोधक क्रिया २५८.

निरनुनासिक वर्ण २६.

निश्चयवाचक सर्वनाम१७६—१८१

ने ३६६

प

पद ३७२.

पद योजन का क्रम ३६०—३६९.

प

परिमाणवाचक शब्द १८३,३३८.
परे ३०७.
पाना क्रिया के रूप २२५—२२८.
पीना क्रिया २३६,२३९.
पुरुषवाची सर्वनाम १५५—१५६.
पूर्णताबोधक क्रिया २५६.
पूर्णभूतकाल १९८—५,२१०.
पूर्वक २४३.
पूर्वकालिक क्रिया २००,२६४.
प्रकारवाचक शब्द १८३.
प्रश्नवाचक सर्वनाम १७६—१७८.
प्रेरणार्थक क्रिया २४२—२४६.

ब

बहुवचन ३०१—३०४.
बहुब्रीहि समास ३६२.

भ

भया क्रिया २४१.
भविष्यतकाल १९६, १९९.
भाव १९३—१९५,२९३,३९५.
भावप्रधान क्रिया ३९३—३९६.
भाववाचक अव्यय ३३८.
भाववाचक संज्ञा १०२,१०३.
भूतकाल १९६,१९७.
भाषा क्या है १.

म

मध्यम पुरुष १५५,१५८.
महाप्राण वर्ण २४,५१.
मात्रा १८,२०,
मूल क्रिया का १८८.
मैं सर्वनाम १५५,१५६.

य

योग रूढ़ि संज्ञा ८७,९०.
योग्यता ३९०,३९९.
यौगिक संज्ञा ८६.

र

रकार वा रेफ ३१.
रहनाक्रिया के रूप २२१—२२४
रहित ३०७.
रूढ़ि संज्ञा ८०,८८.
रेफ ३१.

ल

लिङ्ग के विषय में ९०—११०.
लेना क्रिया २३६, २३९.

व

वर्णविचार ६.
वर्तमानकाल १९६,१९८.
वाक्य ३५४,३९०,४००.
वाक्यविन्यास ३५१—४००.
वाला प्रत्यय २६०,३२३.
विधिक्रिया २००,२०५.
विधेय ३५५—३५६,३०५
विभाजक शब्द ३५०.
विशेषण ६४,१४०,३३२,३०६—३८६
विशेष्य ३०६—३८६.
विसर्ग १५,१६.
विसर्ग संधि ७६,८१.
विस्मयादिबोधक शब्द ३५१.

वैषयिक आधार ३१७.
वैसा १८३.

व्य

व्यंजन १३—१६,२१—३६.
व्यंजन के वर्ग २१.
व्यंजन संधि ६६—७५.
व्यक्तिवाचक संज्ञा ९३.
व्याकरण का अर्थ ३.

श

शक्तिबोधक क्रिया २५५.
शब्द के प्रकार ८३.
शब्दसाधन ७, ८२.

स

संख्या के विषय १११,-११२.
संख्यावाचकविशेषण१५१,३६१,३८०.
संज्ञा ८४.
संज्ञा के प्रकार ८७, ९१.
संज्ञा के रूपकरण ११८—१४६.
संदिग्ध भविष्यत काल १९९.
संदिग्ध भूतकाल १९७,२०२-३,२११.
संदिग्ध वर्तमानकाल १९८,२०८.
संधि ५२—८१.
संभाव्य भविष्यतकाल २०२
संयुक्त क्रिया २५०—२६४.
संयुक्त व्यंजन २७—३६.
सकना क्रिया २४६,२५५.
सकर्मक क्रिया १८६,३६८,३६९.
समानता सूचक सा १८३.
समास ३२८—३३५.
समुच्चायक अव्यय ३५०.
सम्प्रदानकारक११६—३,३००—३०४.
सम्बन्धकारक११४—६,३०६—३१५.
सम्बन्धवाचकसर्वनाम १७६—१८१.
सम्बन्धसूचक अव्यय ३४४,३४५.
सम्बोधन कारक ११४—८.
सर्वनाम संज्ञा ९६,१५३—१८४.
साधारण रूप क्रिया का १८७.
सानुनासिक वर्ण २४,२५,५१.
सामान्यभविष्यतकाल१९९,२०२,
२०४.
सामान्य भूतकाल १९७,२०१.
सामान्य वर्तमानकाल १९८,२०६.
सो १८१.
स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय १०५—११०.
स्थानवाचक अव्यय ३३८.
स्वर का अर्थ १२.
स्वर संधि ५८—६५.

ह

हल का अर्थ १४.
हारा प्रत्यय २६७.
हेतु २६३,२६४,३१२
हेतुहेतुमद्भूत काल १९७—९.
होना क्रिया २०५,२३६,२४९.
होना क्रियाके रूप २१६—२२०

National Library